قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

(७५) वह कहने लगे मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ रह कर कदापि धैर्य नहीं रख सकते।

قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَن شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا ﴿٧٦﴾

(७६) (मूसा ने) उत्तर दिया यदि अब इसके पश्चात मैं आप से किसी वस्तु के विषय में प्रश्न करूँ तो नि:संदेह आप मुझे अपने साथ न रखना, नि:संदेह मेरी ओर से[1] आप कारण को पहुँच चुके।

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ ۖ قَالَ

(७७) फिर दोनों चले, एक गाँववासियों के पास आकर उनसे भोजन माँगा, उन्होंने उनके अतिथि सत्कार से इंकार कर दिया,[2] दोनों ने वहाँ एक दीवार पायी जो गिरना चाहती थी, उसने उसे सीधी कर दिया[3] (मूसा)

---

[1]अर्थात यदि अब प्रश्न करूँ तो अपने साथ रखने के सौभाग्य से मुझे वंचित कर दें, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी, इसलिए कि आपके पास उचित कारण होगा।

[2]अर्थात यह कंजूसों तथा नीच लोगों की बस्ती थी कि अतिथियों के सत्कार ही को अस्वीकार कर दिया, जबकि वास्तव में यात्रियों को खाना खिलाना तथा अतिथि सत्कार करना प्रत्येक धर्म विधान के नैतिक शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अतिथि सत्कार तथा अतिथियों के सम्मान को ईमान की माँग बताया है। फ़रमाया :

«مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَه»

"जो अल्लाह तथा आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, उसे चाहिए कि अतिथि का आदर तथा सत्कार करे।" (फ़ैज़ुल क़दीर शरः अल-जामे अस्सग़ीर)

[3]आदरणीय ख़िज़्र ने उस दीवार को हाथ लगाया तथा चमत्कारिक रूप से वह सीधी हो गयी जैसाकि सहीह बुख़ारी के कथन से स्पष्ट है।

لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ۝٧٧

कहने लगे यदि आप चाहते तो इस पर मज़दूरी ले लेते ।[1]

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝٧٨

(७८) उसने कहा बस यह जुदाई है मेरे तथा तेरे मध्य[2], अब मैं तुझे इन बातों की वास्तविकता भी बताऊँगा, जिस पर तुझे धैर्य न रखा जा सका ।[3]

---

[1]आदरणीय मूसा जो बस्ती वालों के व्यवहार से पहले ही क्षुब्ध थे, आदरणीय ख़िज़्र के बिना मज़दूरी उपकार पर मौन न रह सके तथा बोल पड़े कि जब इन बस्ती वालों ने हमारी यात्रा, आवश्यकता तथा आदर तथा सत्कार किसी बात पर भी ध्यान नहीं दिया तो कब यह लोग इस योग्य हैं कि इनके ऊपर उपकार किया जाये ।

[2]आदरणीय ख़िज़्र ने कहा कि मूसा, यह तीसरा अवसर है कि तुम सहन नहीं कर सके तथा अब स्वयं तेरे कहने के अनुसार मैं तुझे साथ रखने में विवश हूँ ।

[3]परन्तु बिछड़ने से पूर्व आदरणीय ख़िज़्र ने तीनों घटनाओं की वास्तविकता से उन्हें अवगत तथा सूचित करना आवश्यक समझा, ताकि मूसा किसी शंका के शिकार न हो जायें तथा वह यह समझ लें कि नबूअत का ज्ञान अन्य है, जिससे उन्हें सुशोभित किया गया है तथा कुछ उत्पत्ति के विषय का ज्ञान अन्य है, जो अल्लाह की इच्छा एवं ज्ञान के अधीन है जिसका ज्ञान, आदरणीय ख़िज़्र को दिया गया है तथा उसी के अनुसार उन्होंने ऐसे काम किये जो धार्मिक नियमानुसार उचित नहीं थे तथा इसीलिए आदरणीय मूसा उचित रूप से उन पर मौन नहीं रह सके थे । इन्हीं प्राकृतिक नियमों को पूर्ण करने के परिणाम स्वरूप कुछ ज्ञानियों का विचार है कि आदरणीय ख़िज़्र मनुष्यों में से नहीं थे तथा इसलिए वह उनकी नबूअत, रिसालत, अथवा विलायत के विवाद में नहीं पड़ते क्योंकि ये सारे पद तो मनुष्यों के साथ ही विशेष रूप से रहे हैं । वे कहते हैं कि वह फ़रिश्ता थे परन्तु यदि अल्लाह तआला अपने किसी नबी को कुछ उत्पत्ति के नियमों से अवगत करके उनके द्वारा यह कार्य करवा ले तो यह भी कोई असम्भव बात नहीं है । जब वह प्रकाशना प्राप्तकर्ता स्वयं इस बात का स्पष्टीकरण कर दे कि मैंने ये कार्य अल्लाह के आदेश से ही किये हैं, तो यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से धार्मिक नियमों के विरूद्ध दिखते हैं, परन्तु जब उनका सम्बन्ध प्राकृतिक नियमों से है तो वहाँ मान्य तथा अमान्य पर कोई विवाद आवश्यक नहीं । जैसे प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत कोई रोगी होता है, कोई मरता है, किसी का व्यापार नाश हो जाता है, समुदायों पर प्रकोप आता है । इनमें से कुछ कार्य कई बार अल्लाह की आज्ञानुसार फ़रिश्ते ही करते हैं, तो जिस प्रकार यह बातें किसी को आज

(७९) नाव तो कुछ निर्धनों की थी, जो नदी में कार्य करते थे। मैंने उसमें कुछ तोड़-फोड़ करने का विचार कर लिया क्योंकि उनके आगे एक राजा था, जो प्रत्येक अच्छी नाव को ज़बरदस्ती ले लेता था।

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَٰكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُم مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾

(८०) तथा उस नवयुवक के माता-पिता ईमानदार थे। हमें यह भय हुआ कि कहीं यह उन्हें अपनी दुष्टता तथा अधर्म से विवश तथा व्याकुल न कर दे।

وَأَمَّا الْغُلَٰمُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَآ أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَٰنًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾

(८१) इसलिए हमने चाहा कि उन्हें उनका प्रभु उस के बदले इस से उत्तम पवित्र तथा उससे अधिक प्रिय एवं प्रेमी बालक प्रदान कर दे।

فَأَرَدْنَآ أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَوٰةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

(८२) तथा दीवार की कथा यह है कि उस नगर में दो अनाथ बालक हैं, जिनका कोष उनकी इस दीवार के नीचे गड़ा है, उनके पिता अत्यधिक पुनीत व्यक्ति थे, तो तेरा प्रभु चाहता था कि ये दोनों अनाथ अपने यौवन की आयु में जाकर अपना यह कोष तेरे प्रभु की कृपा तथा दया से निकाल लें, मैंने अपने विचार

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَٰمَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنزٌ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَٰلِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَن يَبْلُغَآ أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنزَهُمَا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ

तक धार्मिक नियमों के विरूद्ध नहीं दिखीं उसी प्रकार आदरणीय ख़िज्र के द्वारा घटित होने वाली घटनाओं का सम्बन्ध भी प्राकृति के नियमों से है इसलिए इसे भी धार्मिक नियमों के तराज़ू में तौलना ही उचित नहीं है। परन्तु अब प्रकाशना तथा नबूअत की श्रृंखला समाप्त हो जाने के पश्चात किसी व्यक्ति का इस प्रकार का दावा कदापि उचित तथा स्वीकार्य नहीं होगा जैसाकि आदरणीय ख़िज्र से सम्बन्धित है क्योंकि आदरणीय ख़िज्र का मामला तो क़ुरआन की आयतों से सिद्ध है, इसलिए नकारा नहीं जा सकता, परन्तु अब जो भी इस प्रकार का दावा अथवा कार्य करेगा, उसको अस्वीकार करना अनिवार्य तथा आवश्यक है क्योंकि अब वह निश्चित ज्ञान के साधन नहीं हैं जिससे उसके दावे तथा कार्य की वास्तविकता स्पष्ट हो सके।

(तथा अधिकार) से कोई कार्य नहीं किया,[1] यह यर्थाथता थी उन घटनाओं की जिन पर आप धैर्य न रख सके।

مَا لَمْ تَسْطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝٨٢

(८३) तथा आप से ज़ुल्करनैन की घटना के विषय में यह लोग पूछ रहे हैं।[2] (आप) कह

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَن ذِى ٱلْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ

---

[1]आदरणीय ख़िज्र की नबूअत के पक्षधारी का यह दूसरा तर्क है जिससे वे आदरणीय ख़िज्र की नुबूअत (ऋषित्व) को सिद्ध करते हैं। क्योंकि किसी ग़ैर नबी के पास इस प्रकार की प्रकाशना नहीं आती कि वह इतने विशेष कार्य किसी दैवी संकेत पर कर दे, न किसी ग़ैर नबी का ऐसा दैवी संकेत कार्य करने योग्य ही है। आदरणीय ख़िज्र की नबूअत की तरह आदरणीय ख़िज्र का जीवन भी एक क्षेत्र में मतभेद का विषय है तथा जो ख़िज्र को जीवित मानते हैं बहुत से लोगों की उनसे भेंट सिद्ध करते हैं तथा फिर इससे उनके अब तक जीवित होने को प्रमाणित करते हैं, परन्तु जिस प्रकार आदरणीय ख़िज्र के जीवन पर कोई धार्मिक सूत्र लिखित रूप से नहीं है, इसी विधि से लोगों के अन्तर्ज्ञान अथवा जागृत अवस्था अथवा सोने की स्थिति में आदरणीय ख़िज्र से मिलने का दावा भी स्वीकार्य नहीं। जब उनकी रूप रेखा ही प्रमाणित साधनों से प्राप्त नहीं है तो उनकी पहचान किस प्रकार सम्भव है ? तथा किस प्रकार उस पर विश्वास किया जा सकता है कि जिन महानुभावों ने मिलने के दावे किये हैं, वास्तव में उनकी भेंट मूसा के ख़िज्र से हुई है, ख़िज्र के नाम से उन्हें किसी ने धोखे तथा छल में लिप्त नहीं किया।

[2]यह मूर्तिपूजकों के तीसरे प्रश्न का उत्तर है जो यहूदियों के कहने पर उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किये थे। ذوالقرنين का शाब्दिक अर्थ है दो सींघ वाला। यह नाम इसलिए पड़ा कि वास्तव में उसके सिर पर दो सींघ थी अथवा इसलिए कि उसने दुनिया के पूर्वी तथा पश्चिमी किनारे पर पहुँच कर सूर्य की किरणों अर्थात उसकी प्रकाश रेखा का दर्शन किया, कुछ कहते हैं कि उसके सिर पर बालों की दो लटें (जटायें) थीं, قرن बालों की चोटी को भी कहते हैं अर्थात दो चोटियों वाला। प्राचीन व्याख्याकारों ने बिना किसी मतभेद के इसका चरितार्थ सिकन्दर रूमी को बताया है जिसकी विजय का क्षेत्र पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ था। परन्तु आधुनिक व्याख्याकारों ने आधुनिक ऐतिहासिक ज्ञान के आधार पर इससे सहमत नहीं किया हैं। विशेष रूप से मौलाना अबुल कलम आज़ाद ने इस पर जो शोध कार्य किया है तथा उस व्यक्ति की खोज में जो मेहनत की है, वह अत्यन्त सम्माननीय है। उनके शोध का सारांश यह है कि उस ज़ुल्करनैन के विषय में क़ुरआन ने वर्णन किया है कि वह ऐसा राजा था (१) जिसको अल्लाह ने साधन तथा माध्यम अधिक मात्रा में प्रदान किया था, (२) वह पूर्वी तथा पश्चिमी देशों को विजय करता हुआ एक ऐसी पर्वतीय घाटी में पहुँचा जिसकी दूसरी

سَأَتْلُوا عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾

दीजिए कि मैं उन का थोड़ा-सा हाल तुम्हें पढ़ कर सुनाता हूँ।

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِن كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾

(८४) हमने धरती पर उसे शक्ति प्रदान की थी तथा उसे हर वस्तु[1] के साधन भी प्रदान कर दिये थे।

فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

(८५) वह एक मार्ग के पीछे लगा।[2]

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ

(८६) यहाँ तक कि सूर्यास्त के स्थान तक पहुँच गया तथा उसे एक दलदल के स्रोत में डूबते हुए पाया[3] तथा उस स्रोत के स्थान पर

ओर याजूज तथा माजूज थे, (३) उसने वहाँ याजूज तथा माजूज को रोकने के लिए एक अत्यधिक सुदृढ़ बाँध निर्मित कराया, (४) वह न्याय प्रिय था, (५) अल्लाह को मानने वाला तथा आख़िरत पर ईमान रखने वाला था, (६) वह अहंकारी तथा धन का लोभी नहीं था। मौलाना मरहूम फ़रमाते हैं कि इन विशेषताओं से परिपूर्ण फ़ारस का वह महाराजा है जिसे यूनानी साईरस, हिब्रू भाषा में ख़ोरिस तथा अरब में खुसरू के नाम से पुकारते हैं। उसका राज्य काल ५३९ ई॰ पू॰ है। इसके अतिरिक्त फ़रमाते हैं कि १८३८ ई॰ में साईरस की एक मूर्ति निकली थी जिसमें साईरस के शरीर को इस प्रकार दिखाया गया था कि उसके दोनों ओर बाज़ की भाँति पंख निकले हुए हैं तथा सिर पर भेड़ की तरह दो सींघ हैं (विस्तृत जानकारी के लिए देखें तफ़सीर तर्जुमानुल क़ुरआन, भाग १, पृ॰ ३९९ से ४३० तक पुराना संस्करण)

[1] سبب का मूल अर्थ रस्सी है, इसका प्रयोग ऐसे साधन तथा माध्यम के लिये होता है जो लक्ष्य प्राप्ति के लिये प्रयोग किया जाता है, इस आधार पर سببا का अर्थ है कि हमने उसे ऐसे साधन तथा माध्यम उपलब्ध किये, जिनसे काम लेकर उसने विजय प्राप्त की, शत्रुओं का गर्व मिट्टी में मिलाया, अत्याचारी प्रशासको को नाश किया।

[2] दूसरे سبب का अर्थ मार्ग लिया गया है अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह के दिये हुए साधनों से अन्य साधन तैयार किये, जिस प्रकार अल्लाह के उपलब्ध कराये लोहे से विभिन्न प्रकार के हथियार तथा इसी प्रकार के अन्य मूल द्रव्य से बहुत-सी चीज़ें तैयार की जाती हैं।

[3] عين से तात्पर्य स्रोत अथवा समुद्र है। حمئة कीचड़, दलदल, وجد (पाया) अर्थात देखा अथवा आभास किया। अर्थ यह है कि ज़ुल्करनैन जब पश्चिमी दिशा की ओर देश पर देश विजय करता हुआ उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ अन्तिम आबादी थी वहाँ गंदे पानी का

عِندَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَٰذَا ٱلْقَرْنَيْنِ إِمَّآ أَن تُعَذِّبَ وَإِمَّآ أَن تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

एक समुदाय को भी पाया, हमने कह दिया[1] हे ज़ुल्करनैन ! तू उन्हें दुख पहुँचाये अथवा उनके विषय में तू कोई उचित मार्ग निकाले ।[2]

قَالَ أَمَّا مَن ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُۥ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِۦ فَيُعَذِّبُهُۥ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾

(८७) उसने कहा कि जो अत्याचार करेगा उसे तो हम भी अब दण्ड देंगे ।[3] फिर वह अपने प्रभु की ओर लौटाया जायेगा तथा वह उसे कड़ी यातना देगा ।

وَأَمَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَلَهُۥ جَزَآءً ٱلْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُۥ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

(८८) परन्तु जो ईमान लाये तथा सत्कर्म करे उसके लिए बदले में भलाई है तथा हम उसे अपने कार्य में भी सरलता का आदेश देंगे।

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾

(८९) फिर वह अन्य मार्ग[4] की ओर लगा ।

حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ ٱلشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل

(९०) यहाँ तक कि जब सूर्योदय के स्थान पर पहुँचा तो उसे एक ऐसे समुदाय पर उदय होता

स्रोत अथवा समुद्र था जो नीचे से काला दिखायी पड़ता था, उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो सूर्य इस स्रोत में डूब रहा है । समुद्र के किनारे से अथवा दूर से जिसके आगे की सीमा तक कुछ न हो, सूर्यास्त का दृश्य देखने वालों को ऐसा ही प्रतीत होता है कि सूर्य समुद्र में अथवा धरती में डूब रहा है, यद्यपि वह अपने स्थान पर ही आकाश में रहता है।

[1] قلنا (हमने कहा) प्रकाशना के द्वारा, इसीलिए कुछ धर्मगुरूओं ने इसी से उनकी नबूअत का तर्क दिया है । तथा जो उनकी नबूअत (ऋषित्व) के पक्ष में नहीं हैं, कहते हैं कि उस समय के पैग़म्बर के माध्यम से हमने उससे कहा ।

[2]अर्थात हम ने उस समुदाय पर प्रभुत्व देकर अधिकार दे दिया कि चाहे तो उसे हत करे तथा बन्दी बना ले अथवा कर लेकर उपकार स्वरूप छोड़ दे ।

[3]अर्थात जो कुफ़्र तथा मूर्तिपूजा पर अडिग रहेगा, उसे हम दण्ड देंगे अर्थात पिछली त्रुटियों पर पकड़ नहीं होगी ।

[4]अर्थात अब पश्चिम से पूर्व की ओर यात्रा प्रारम्भ की ।

पाया कि उनके लिए हमने उससे अन्य कोई पर्दा तथा आड़ नहीं बनायी ।[1]

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾

(९१) घटना ऐसी ही है। हमने उसके आस-पास के कुल समाचारों को घेर रखा है ।[2]

كَذٰلِكَ ۖ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

(९२) वह फिर एक अन्य मार्ग की ओर लगा ।[3]

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾

(९३) यहाँ तक कि जब दो दीवारों के मध्य [4] पहुँचा उन दोनों के उस ओर एक ऐसा समुदाय पाया जो बात समझने के निकट भी न थी ।[5]

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾

(९४) (उन्होंने) कहा हे ज़ुल्करनैन ! [6] याजूज

قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ

---

[1]अर्थात ऐसे स्थान पर पहुँच गया जो पूर्व दिशा की अन्तिम आबादी थी, जहाँ उसने ऐसा समुदाय देखा जो मकानों में निवास करने के बजाय मैदानों तथा मरूस्थलों में निवास किये हुए, निर्वस्त्र था। यह अर्थ है उनके तथा सूर्य के बीच पर्दा नहीं था। सूर्य उनके नंगे शरीरों पर उदय होता था।

[2]अर्थात ज़ुल्करनैन के विषय में हमने जो वर्णन किया है, वह इसी प्रकार है कि पहले वह पश्चिम की अन्तिम सीमा तक फिर पूर्व की अन्तिम सीमा तक पहुँचा तथा हमें उसकी सब अर्हताओं, संसाधनों एवं अन्य बातों का पूरा ज्ञान है।

[3]अर्थात अब उसका ध्यान किसी अन्य ओर हो गया।

[4]इससे तात्पर्य दो पर्वत हैं जो एक-दूसरे के सम्मुख थे, उनके मध्य घाटी थी, जिससे याजूज तथा माजूज इधर आबादी में आ जाते तथा उपद्रव मचाते तथा हत्या का बाजार गर्म करते।

[5]अर्थात अपनी भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य की भाषा नहीं समझते थे।

[6]ज़ुल्करनैन से यह सम्बोधन या तो किसी अनुवादक के द्वारा हुआ होगा अथवा अल्लाह तआला ने ज़ुल्करनैन को जो विशेष माध्यम तथा साधन प्राप्त कराये थे उन्हीं में विभिन्न भाषाओं का ज्ञान भी हो सकता है तथा इस प्रकार यह सम्बोधन सीधे भी हो सकता है।

مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

तथा माजूज इस देश में बड़े उपद्रवी हैं।[1] तो क्या हम आपके लिए कुछ धन एकत्रित कर दें ? (इस शर्त पर कि) आप हमारे तथा उनके बीच कोई दीवार बना दें।

قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾

(९५) उसने उत्तर दिया कि मेरे वश में मेरे प्रभु ने जो प्रदान कर रखा है वही उत्तम है, तुम केवल अपनी शक्ति तथा बल से मेरी सहायता करो तुम्हारे तथा उनके मध्य मैं सुदृढ़ दीवार बना देता हूँ।[2]

اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۗ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

(९६) मुझे लोहे की चादरें ला दो। यहाँ तक कि जब उन दो पर्वतों के मध्य दीवार तैयार कर दी[3] तो आदेश दिया कि फूँको (अर्थात तेज़ आग जलाओ) उस समय तक कि लोहे की इन चादरों को बिल्कुल आग कर दिया, तो कहा मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा डाल दूँ।[4]

---

[1]याजूज तथा माजूज दो सम्प्रदाय हैं तथा सहीह हदीस के आधार पर मानव जाति से ही हैं तथा उनकी संख्या अन्य मानव जाति के सापेक्ष अधिक होगी तथा उन्हीं से नरक अधिक भरेगा। (सहीह बुख़ारी तफ़्सीर सूरअल हज्ज वल रिक़ाक़ बाबु इन्न ज़लज़लतुस्साअते शैउन अज़ीम, तथा सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब कौलिहि यक़ूलुल्लाहु ले-आदम, अख़रिज बअसलनार)

[2]शक्ति से तात्पर्य अर्थात तुम मुझे निर्माण सामग्री तथा कर्मयोगी उपलब्ध कराओ।

[3]بين الصدفين अर्थात दोनों पर्वतों के किनारों के मध्य जो खुला था, उसे लोहे की छोटी-छोटी चादरों से भर दिया।

[4] قطرا पिघला हुआ सीसा अथवा लोहा अथवा ताँबा। अर्थात लोहे की चादरों को ख़ूब गर्म कराके उनके ऊपर पिघला हुआ लोहा, ताँबा अथवा सीसा डालने से वह पहाड़ी घाटी अथवा मार्ग इतना मज़बूत हो गया कि उसे पार करके अथवा तोड़कर याजूज तथा माजूज का इधर दूसरे मनुष्यों की आबादी में आना असम्भव हो गया।

(९७) फिर न तो उनमें उस दीवार पर चढ़ने की शक्ति थी तथा न उसमें कोई छेद कर सकते थे।

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

(९८) कहा कि यह केवल मेरे प्रभु की कृपा है, परन्तु जब मेरे प्रभु का वादा आयेगा, तो उसे धराशायी कर देगा।[1] नि:संदेह मेरे प्रभु का वादा सत्य है।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾

---

[1]अर्थात यह दीवार यद्यपि बड़ी दृढ़ बना दी गयी जिसके ऊपर चढ़कर अथवा उसमें छिद्र करके याजूज तथा माजूज का इस ओर आना सम्भव नहीं है, परन्तु जब मेरे प्रभु का वादा आ जायेगा, तो वह उसे कण-कण करके धरती के बराबर कर देगा। इस वादे से तात्पर्य क़ियामत के निकट याजूज तथा माजूज का प्रकट होना है, जैसाकि हदीसों में है। जैसे एक हदीस में है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस दीवार में थोड़े से छिद्र होने को उपद्रव के निकट होने के समान बताया है (सहीह बुख़ारी संख्या ३३४६, तथा सहीह मुस्लिम संख्या २२०८)। एक अन्य हदीस में आता है कि वे प्रत्येक दिन उस दीवार को खोदते हैं तथा फिर कल पर छोड़ देते हैं, परन्तु जब अल्लाह की इच्छा उनके प्रकट होने की होगी तो वे कहेंगे कि कल إن شاء الله उसको खोदेंगे तथा फिर दूसरे दिन वे उससे निकलने में सफल हो जायेंगे। धरती पर उपद्रव मचायेंगे यहाँ तक कि लोग घर में बन्द हो जायेंगे, ये आकाश की ओर तीर फेंकेगे जो रक्त रंजित होकर लौटेंगे। अन्त में अल्लाह तआला उनकी गुद्दियों में ऐसे कीड़े पैदा कर देगा जो उनके विनाश का कारण बनेंगे। (मुसनद अहमद १२/५११ जामेअ तिर्मिज़ी संख्या ३१५३, वल अहादीसुस्सहीह: लिल अलबानी संख्या १७३५) सहीह मुस्लिम में नव्वास बिन समआन के कथन से स्पष्ट है कि याजूज तथा माजूज का प्रकटन आदरणीय ईसा के अवतरित होने के पश्चात उनकी उपस्थिति में होगा। (किताबुल फ़ेतन व अशरातुस्साअते; बाबु ज़िक्रिद दज्जाल) जिससे उन लोगों का खण्डन होता है जो कहते हैं कि तातारियों का मुसलमानों पर हमला अथवा मंगोल तुर्क जिनमें से चंगेज़ ख़ाँ भी था अथवा रूसी अथवा चीनी जातियाँ यही याजूज तथा माजूज हैं, जिनका प्रकटन हो चुका। अथवा पश्चात्य जातियाँ उनके अनुरूप हैं कि पूरी दुनियाँ में उनका प्रभाव है। यह सभी बातें ग़लत हैं क्योंकि उनके प्रभाव से राजनैतिक प्रभाव तात्पर्य नहीं हैं, बल्कि रक्तपात, उपद्रव, आतंक का वह अस्थाई प्रभाव है जिसका सामना करने की शक्ति मुसलमानों में न होगी, तब भी दैवी आपदा के कारण सबके सब क्षण भर में काल के मुख में चले जायेंगे।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

(९९) तथा उस दिन हम उन्हें आपस में एक-दूसरे में गुडमुड होते हुए छोड़ देंगे तथा नर्सिंघा फूँक दिया जायेगा, फिर सब को एक साथ हम एकत्रित कर लेंगे।

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

(१००) तथा उस दिन हम नरक को (भी) काफ़िरों के समक्ष ला खड़ा कर देंगे।

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

(१०१) जिनकी आँखें मेरी याद से पर्दे में थीं तथा (सत्य बात) सुन भी नहीं सकते थे।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

(१०२) क्या काफ़िर यह सोचे बैठे हैं कि मेरे अतिरिक्त वे मेरे दासों को अपना पक्षधर बना लेंगे ? (सुनो) हमने तो उन अधर्मियों के अतिथि सत्कार के लिए नरक को तैयार कर रखा है।[1]

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾

(१०३) कह दीजिए कि यदि (तुम कहो तो) मैं तुम्हें बता दूँ कि अपने कर्मों के कारण सबसे अधिक हानि में कौन है ?

[1] حسب का अर्थ ظن के अर्थ में है तथा عبادي (मेरे भक्त) से तात्पर्य फ़रिश्ते, मसीह अलैहिस्सलाम तथा अन्य महात्मा हैं, जिनको कार्यक्षम तथा कष्ट निवारक समझा जाता है, उसी प्रकार शैतान तथा जिन्नात हैं जिनकी पूजा अर्चना की जाती है। तथा प्रश्न धमकी तथा फटकार के लिए है। अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों के पुजारी क्या यह समझते हैं कि वे मुझे छोड़कर मेरे भक्तों की पूजा करके उनके पक्ष से मेरी यातना से बच जायेंगे ? यह असम्भव है, हमने उन काफ़िरों के लिए नरक तैयार कर रखा है, जिसमें जाने से वे भक्त न रोक सकेंगे जिनकी ये पूजा करते हैं तथा उनको अपना पक्षधर समझते हैं।

(१०४) वे हैं कि जिनके साँसारिक जीवन के सभी प्रयत्न बेकार हो गये तथा वे इसी भ्रम में रहे कि वे बहुत अच्छे कार्य कर रहे हैं ।[1]

ٱلَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝١٠٤

(१०५) यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने प्रभु की आयतों से तथा उससे मिलने से इंकार किया ।[2] अत: उनके सारे कर्म व्यर्थ हो गये, फिर क़ियामत के दिन हम उनका कोई भार निर्धारित न करेंगे ।[3]

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهِۦ فَحَبِطَتْ أَعْمَٰلُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وَزْنًا ۝١٠٥

(१०६) वास्तविकता यह है कि उनका बदला नरक है, क्योंकि उन्होनें कुफ़्र किया तथा मेरी आयतों तथा मेरे रसूलों का उपहास उड़ाया ।

ذَٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا۟ وَٱتَّخَذُوٓا۟ ءَايَٰتِى وَرُسُلِى هُزُوًا ۝١٠٦

---

[1]अर्थात कर्म उनके ऐसे हैं जो अल्लाह के सदन में अप्रिय हैं, परन्तु अपने विचार के कारण समझते हैं कि ये बहुत अच्छे कर्म कर रहे हैं । इससे तात्पर्य कौन हैं ? कुछ विद्वान कहते हैं कि यहूदी तथा इसाई हैं, कुछ कहते हैं अधर्मी तथा अन्य लोग जिन्होंने धर्म में मिश्रण किया है, कुछ कहते हैं मूर्तिपूजक हैं । सही बात यह है कि यह आयत साधारण है जिसमें प्रत्येक वह व्यक्ति तथा गुट सम्मिलित है जिसके अन्दर उपरोक्त दोष पाये जायेंगे । आगे ऐसे ही लोगों के विषय में कुछ अन्य चेतावनियों का वर्णन है ।

[2]प्रभु की निशानियों से तात्पर्य एकेश्वरवाद के वह तर्क हैं जो समस्त जगत में फैले हुए हैं तथा वह धार्मिक निशानियाँ हैं जो उसने अपनी किताबों में अवतरित कीं तथा पैग़म्बरों ने उसका प्रचार-प्रसार किया । तथा प्रभु की भेट से इंकार का अर्थ आख़िरत का जीवन तथा पुन: जीवित हो उठने को अस्वीकार करना है ।

[3]अर्थात हमारे यहाँ इनका कोई महत्व नहीं होगा अथवा यह अर्थ है कि हम उनके लिए तराज़ू का प्रवन्ध ही नहीं करेंगे कि जिसमें उनके कर्म तौले जायेंगे, इसलिए कि कर्म तो उन एकेश्वरवादियों के तौले जायेंगे जिनके कर्मपत्र में पाप तथा पुण्य दोनों होंगे, जबकि इनके कर्मपत्र पुण्य के कार्यों से शून्य होंगे । जिस प्रकार हदीस में आता है "क़ियामत वाले दिन हृष्ट पुष्ट व्यक्ति आयेगा, अल्लाह के सदन में उसका इतना भी भार नहीं होगा जितना मच्छर के पंख का होता है, फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसी आयत का पाठ किया ।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-कहफ़*)

(१०७) जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने अच्छे कार्य भी किये, नि:संदेह उनके लिए फ़िरदौस (स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान)[1] के बाग़ों मे स्वागत है।

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

(१०८) जहाँ वे सदैव रहेंगे, जिस स्थान को बदलने का कभी भी उनका विचार ही न होगा।[2]

خَٰلِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

(१०९) कह दीजिए कि यदि मेरे प्रभु की बातों को लिखने[3] के लिए समुद्र स्याही बन जाये तो वह भी मेरे प्रभु की बातों के समाप्त होने से पूर्व ही समाप्त हो जायेगा, चाहे हम उसी जैसा अन्य भी उसकी सहायता के लिए ले आयें।

قُل لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَٰتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَٰتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِۦ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

(११०) आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा ही एक मानव पुरूष हूँ।[4] (हाँ) मेरी ओर प्रकाशना (वह्यी) की जाती है कि सबका

قُلْ إِنَّمَا أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ فَمَن كَانَ

---

[1] جنت الفردوس स्वर्ग की सर्वोच्च श्रेणी है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि, जब भी तुम अल्लाह से स्वर्ग का प्रश्न करो तो अल-फ़िरदौस (सर्वोच्च) का प्रश्न करो, इसलिए कि वह स्वर्ग का सर्वोच्च भाग है तथा वहीं से स्वर्ग की नदियों का उदगम है। (सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद बाबु व कान अर्शुहू अलल माए)

[2] अर्थात स्वर्ग के रहने वाले, स्वर्ग तथा उसकी सुख-सुविधाओं से कभी नहीं उकतायेंगे कि वह इसके अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर स्थानान्तरित होने की इच्छा व्यक्त करें।

[3] كلمات से तात्पर्य अल्लाह तआला का आच्छादित ज्ञान तथा उसके गुण एवं तर्क तथा युक्तियाँ हैं, जो उसके एक होने के प्रमाण हैं। मानव बुद्धि उन सभी को घेर नहीं सकती तथा संसार भर के वृक्षों के कलम बन जायें तथा सारे समुद्र बल्कि उनकी भाँति अन्य समुद्र भी हों, वह सभी स्याही (रौशनाई) में बदल जायें, क़लम घिस जायेंगे स्याही समाप्त हो जायेगी, परन्तु प्रभु के वाक्य तथा उसके गुण को लिखा नहीं जा सकता।

[4] इसलिए मैं भी प्रभु की बातों का घेरा नहीं कर सकता।

يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾

पूज्य मात्र एक ही पूज्य है।[1] तो जिसे भी अपने प्रभु से मिलने की कामना हो, उसे चाहिए कि पुण्य के कार्य करे तथा अपने प्रभु की आराधना (इबादत) में[2] किसी को भी सम्मिलित न करे।

سُورَةُ مَرْيَمَ

सूरतु मरियम-१९

सूरः मरियम* मक्के में उतरी तथा इसमें अट्ठानवे आयतें हैं तथा छः रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

كٓهيعٓصٓ ﴿١﴾

(१) काफ़॰हा॰या॰ऐन॰स्वाद॰

[1]परन्तु मुझे यह श्रेष्ठता प्राप्त है कि मुझ पर अल्लाह की प्रकाशना अवतरित होती है। उसी प्रकाशना के कारण मैं ने कहफ़ वालों तथा ज़ुल्क़रनैन के सम्बन्ध में अल्लाह की ओर से अवतरित बातें वर्णन की हैं, जिन पर युग की मोटी तह पड़ी हुई थी अथवा उनकी वास्तविकता कल्पित कथाओं में खो गयी थी। इसके अतिरिक्त इस प्रकाशना में यह महत्वपूर्ण आदेश दिया गया है कि तुम सब का अराध्य एक है।

[2]सत्कर्म वह है जो सुन्नत के अनुसार हो अर्थात जो अपने प्रभु से भेंट का विश्वास रखता हो, उसे चाहिए कि प्रत्येक कर्म नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चरित्रानुसार करे। तथा दूसरे यह कि अल्लाह की उपासना (इबादत) में किसी अन्य को साझीदार न ठहराये, इसलिए कि धर्म में नई बातें मिलाना तथा मूर्तिपूजा दोनों ही कर्मों के व्यर्थ होने का कारण हैं। अल्लाह तआला इन दोनों से प्रत्येक मुसलमान को सुरक्षित रखे।

*हब्शा की हिजरत की कथा में बताया गया है कि इथोपिया (हब्शा) के राजा नजाशी तथा उसके सदस्य एवं मंत्रीगण के समक्ष जब सूरः मरियम के प्रारम्भिक भाग आदरणीय जाफ़र बिन अबी तालिब ने सुनाया तो उसे सुनकर उन सभी की दाढ़ियाँ आसूँओं से भीग गयीं तथा नजाशी ने कहा कि यह क़ुरआन तथा आदरणीय ईसा जो ले आये, सब एक ही ज्योति की किरणें हैं। (फ़तहुल क़दीर)

(२) यह है तेरे प्रभु की उस कृपा का वर्णन, जो उसने अपने भक्त ज़करिया[1] पर की थी।

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ۝٢

(३) जबकि उसने अपने प्रभु से गुप्त रूप से प्रार्थना की थी।[2]

إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ۝٣

(४) कहा कि हे मेरे प्रभु! मेरी अस्थियाँ निर्बल हो गयी हैं तथा सिर बुढ़ापे के कारण भड़क उठा है।[3] परन्तु मैं कभी भी तुझ से प्रार्थना करके वंचित नहीं रहा।[4]

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝٤

(५) तथा मुझे अपने (मरने के) पश्चात अपने निकट सम्बन्धियों का भय है,[5] मेरी पत्नी भी बाँझ है, परन्तु तू मुझे अपनी ओर से[6] उत्तराधिकारी प्रदान कर।

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۝٥

---

[1]आदरणीय ज़करिया इस्राईल के वंश में से नबी हैं। यह बढ़ई थे तथा यही व्यवसाय उनके आय का साधन था। (सहीह मुस्लिम बाबु मिन फ़ज़ाएले ज़करिया)

[2]गुप्त रूप से प्रार्थनायें इसलिए कीं कि एक तो यह अल्लाह को अधिक प्रिय हैं क्योंकि इसमें गिड़गिड़ाना, ध्यान, विनय तथा नम्रता अधिक होती है। दूसरे इसलिए कि भ्रष्ट बुद्धि वाले न कहें कि यह बूढ़ा अब बुढ़ापे में सन्तान माँग रहा है, जबकि संतान के सभी प्रत्यक्ष सम्भावनायें समाप्त हो चुके हैं।

[3]अर्थात जिस प्रकार लकड़ी आग से भड़क उठती है, उसी प्रकार मेरा सिर बालों की सफेदी के कारण भड़क उठा है तात्पर्य निर्बलता तथा बुढ़ापे का प्रदर्शन है।

[4]तथा इसलिए प्रत्यक्ष साधन का अभाव होते हुए तुझसे सन्तान माँग रहा हूँ।

[5]इस भय से तात्पर्य यह है कि यदि मेरा कोई उत्तराधिकारी मेरी शिक्षा-दीक्षा का पद नहीं संभालेगा, तो मेरे सम्बन्धियों में तो कोई इस पद के योग्य नहीं है। परिणाम स्वरूप मेरे सम्बन्ध भी तेरे मार्ग से मुख न मोड़ लें।

[6]"अपने पास से" का अर्थ यही है कि यदि प्रत्यक्ष साधन इसके समाप्त हो गये हैं, परन्तु तू अपनी विशेष कृपा से मुझे सन्तान प्रदान कर।

(६) जो मेरा भी उत्तराधिकारी हो तथा याक़ूब के वंश का भी उत्तराधिकारी तथा हे मेरे प्रभु ! तू उसे स्वीकृत भक्त बना ले ।

يَّرِثُنِىْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ⑥

(७) हे ज़करिया ! हम तुझे एक बालक की शुभसूचना देते हैं, जिसका नाम यहया है, हमने उससे पूर्व इसका सनाम भी किसी को नहीं किया ।[1]

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۣ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ⑦

(८) (ज़करिया) कहने लगे मेरे प्रभु ! मेरे यहाँ बालक कैसे होगा, मेरी पत्नी बाँझ तथा मैं स्वयं बुढ़ापे की अति निर्बल अवस्था को पहुँच चुका हूँ ।[2]

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ⑧

(९) आदेश हुआ कि (वचन) इसी प्रकार हो चुका, तेरे प्रभु ने कह दिया है कि मुझ पर तो

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ

---

[1]अल्लाह तआला ने न केवल प्रार्थना ही स्वीकार की अपितु उस बालक का नामकरण भी कर दिया ।

[2] عاقر उस स्त्री को भी कहते हैं, जो अपने बुढ़ापे के कारण जनने की योग्यता से वंचित हो चुकी हो तथा प्रारम्भ से ही बाँझ को भी कहते हैं । यहाँ यह दूसरे ही अर्थ में है । जो लकड़ी सूख जाये, उसे عتيـا कहते हैं । तात्पर्य बुढ़ापे का अन्तिम चरण है, जिसमें हड्डियाँ अकड़ जाती हैं । अर्थ यह है कि मेरी पत्नी तो युवावस्था से ही बाँझ है तथा मैं बुढ़ापे के अन्तिम चरण में पहुँच चुका हूँ, अब सन्तान कैसे सम्भव है ? कहा जाता है कि आदरणीय ज़करिया की पत्नी का नाम अशाअ बिन्ते फ़ाक़ूद बिन मील था तथा यह आदरणीया हना (मरियम की माता) की बहन हैं । परन्तु अधिक उचित कथन लगता है कि आदरणीया अशाअ भी आदरणीय इमरान की पुत्री हैं जो आदरणीय मरियम के भी पिता थे । इस प्रकार आदरणीय यहया तथा ईशदूत ईसा आपस में मौसेरे भाई हैं । हदीस सहीह से भी इसकी पुष्टि होती है । (फ़तहुल क़दीर)

وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ⑨

यह बिल्कुल सरल है तथा तू स्वयं जबकि कुछ न था मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ ।[1]

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ⑩

(१०) कहने लगे हे मेरे प्रभु ! मेरे लिए कोई लक्षण बना दे, आदेश हुआ कि तेरे लिए लक्षण यह है कि स्वस्थ होने के उपरान्त भी तू तीन रातों तक किसी व्यकित से बोल न सकेगा ।[2]

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ⑪

(११) अब ज़करिया अपने कमरे (हुजरे)[3] से निकल कर अपने समुदाय के पास आकर उन्हें संकेत करते हैं कि तुम प्रात: तथा सायं अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करो ।[4]

---

[1]फ़रिश्तों ने आदरणीय ज़करिया का विस्मय दूर करने के लिए कहा कि अल्लाह तआला ने तुझे पुत्र देने का निर्णय कर लिया है, जिसके अनुसार तुझे अवश्य पुत्र मिलेगा, तथा यह अल्लाह के लिए कदापि कठिन नहीं है क्योंकि जब वह तुझे न से हाँ कर सकता है, तो तुझे प्रत्यक्ष साधन से हटकर पुत्र भी प्रदान कर सकता है ।

[2]रातों से तात्पर्य दिन तथा रात हैं سويا का अर्थ है बिल्कुल ठीक-ठीक, स्वस्थ अर्थात ऐसा कोई रोग न होगा जो तुझे बोलने से रोक दे । परन्तु इसके उपरान्त तेरे मुख से वार्तालाप न हो सके तो समझ लेना शुभसूचना के दिन निकट आ गये ।

[3] محراب से तात्पर्य वह कमरा जिसमें अल्लाह की आराधना (इबादत) करते थे । यह حرب शब्द से बना है, حرب का अर्थ है युद्ध । अर्थात उपासना स्थल (इबादतगाह) में रहकर अल्लाह की उपासना (इबादत) करना ऐसा है कि जैसे शैतान से लड़ रहा है ।

[4]प्रात: तथा सायं अल्लाह की प्रशंसा से तात्पर्य फ़ज्र तथा अस्र की नमाज़ है । अथवा यह अर्थ है कि इन दो समय में अल्लाह की प्रशंसा, महिमा तथा पवित्रता के वर्णन का विशेष प्रयोजन करो ।

(१२) हे यहया ! (मेरी) किताब[1] को दृढ़ता से थाम ले तथा हमने उसे बाल्यकाल ही से ज्ञान प्रदान किया ।[2]

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾

(१३) तथा अपने पास से दया तथा पवित्रता भी[3] वह परहेजगार (संत) व्यक्ति था ।

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۖ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾

(१४) तथा अपने माता-पिता के साथ सुशील था, वह क्रूर तथा पापी न था ।[4]

وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾

(१५) उस पर शान्ति है जिस दिन उसने जन्म लिया तथा जिस दिन वह मरे, तथा जिस दिन वह जीवित करके उठाया जायेगा ।[5]

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾

---

[1]अर्थात अल्लाह तआला ने आदरणीय ज़करिया को यहया प्रदान किया, तथा जब वह कुछ बड़े हुए, यद्यपि अभी बालक थे, उन्हें अल्लाह ने किताब को दृढ़ता से पकड़ने अर्थात उसके आदेशानुसार कर्म करने का आदेश दिया । किताब से तात्पर्य तौरात है अथवा उन पर विशेष रूप से अवतरित कोई पुस्तक है, जिसका अब हमें कोई ज्ञान नहीं ।

[2] حكم से तात्पर्य बुद्धिमानी, समझ, बोध, किताब में लिखित धार्मिक आदेशों की समझ, ज्ञान तथा कर्म का समिश्रण अथवा नबूअत तात्पर्य है । इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि इस बात में कोई रूकावट नहीं है कि حكم में यह सारी ही बातें सम्मिलित हैं ।

[3] حنانا प्रेम तथा दया, अर्थात हमने उसको माता-पिता तथा सम्बन्धियों से प्रेम तथा दया करने का भाव तथा उसे मन के मैल तथा पापों से शुद्धता एवं पवित्रता भी प्रदान की ।

[4]अर्थात अपने माता-पिता की अथवा अपने प्रभु की अवहेलना करने वालों में से नहीं था । इसका अर्थ यह है कि यदि किसी के दिल में माता-पिता के प्रेम तथा आदर एवं उनके आज्ञापालन तथा सेवा एवं सद्व्यवहार की भावना अल्लाह तआला उत्पन्न कर दे तो यह उसकी विशेष कृपा एवं दया है तथा इसके विपरीत भावना अथवा व्यवहार अल्लाह तआला की विशेष कृपा से वंचित होने का परिणाम है ।

[5]तीन अवसर मनुष्य के लिए अत्यन्त भयावह होते हैं १- जब मनुष्य माता के गर्भ से बाहर आता है, २- जब मृत्यु का पंजा उसे अपनी पकड़ में लेता है, ३- जब उसे क़ब्र से जीवित करके उठाया जायेगा, तो वह अपने को मैदान हश्र की भयानकता में घिरा हुआ पायेगा । अल्लाह तआला ने फ़रमाया इन तीनों स्थानों पर उसके लिये हमारी ओर से

(१६) इस किताब में मरियम की कथा भी वर्णन कर जबकि वह अपने परिवार के लोगों से अलग होकर पूर्वी ओर आयीं।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾

(१७) तथा उन लोगों की ओर से पर्दा कर लिया,[1] फिर हमने उसके पास अपनी आत्मा (जिब्रील अलैहिस्सलाम) को भेजा, तो वह उसके समक्ष पूरा मनुष्य बनकर प्रकट हुआ।[2]

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾

सुरक्षा तथा शान्ति है। कुछ लोग जो धर्म में नई बातें बनाते हैं इस आयत से जन्म दिन पर ईद मिलाद का अर्थ निकालते हैं। परन्तु कोई उनसे पूछे तो कि फिर मृत्यु वाले दिन 'ईद वफ़ात' (मृत्यु बर्सी) भी मनाना आवश्यक होगी क्योंकि जिस प्रकार जन्म दिन के लिए 'सलाम' है मृत्यु के दिन के लिए भी सलाम है। यदि मात्र शब्द 'सलाम' से 'ईद मिलाद' की पुष्टि सम्भव है, तो फिर इसी शब्द से 'ईद वफ़ात' की भी पुष्टि होती है। परन्तु यहाँ मृत्यु की ईद तो दूर, प्रारम्भ से मृत्यु ही का इंकार है। अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु को अस्वीकार करके क़ुरआन के शब्दों को अस्वीकार तो करते ही हैं, स्वयं अपने भावार्थ के आधार पर एक भाग को मानते हैं, तथा उसी आयत के दूसरे भाग को, उन्हीं के भावार्थ के आधार पर जो सिद्ध होता है, अस्वीकार करते हैं।

﴿أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ﴾

"क्या किताब के कुछ भाग पर विश्वास रखते हो तथा कुछ का इंकार करते हो।"
(*सूर: अल-बक़र:-८५*)

[1]यह अलगाव तथा पर्दा अल्लाह की इबादत के उद्देश्य से था ताकि उन्हें कोई न देखे तथा एकाग्रता रहे अथवा मासिक धर्म की पवित्रता के लिए। तथा पूर्वी स्थान से तात्पर्य बैतुल मोक़द्दिस का पूर्वी भाग है।

[2] روح से तात्पर्य आदरणीय जिब्रील हैं, जिन्हें पूर्ण मनुष्य के रूप में आदरणीया मरियम के पास भेजा गया, जब आदरणीया मरियम ने देखा कि एक व्यक्ति बिना किसी रूकावट के अन्दर प्रवेश कर आया है, तो डर गईं कि यह कुविचार से न आया हो। आदरणीय जिब्रील ने कहा मैं वह नहीं हूँ जो तुम समझ रही हो, अपितु तेरे प्रभु का संदेशवाहक हूँ तथा यह शुभसूचना देने आया हूँ कि तुझे अल्लाह तआला एक पुत्र प्रदान करेगा, प्रत्यक्ष कारणों के आधार पर आदरणीय जिब्रील ने उनके कुर्ते के गले पर फूंक मारी थी, जिससे

(१८) यह कहने लगीं मैं तुझसे दयालु (रहमान) की शरण माँगती हूँ यदि तू कुछ भी अल्लाह से डरने वाला है।

قَالَتْ إِنِّىٓ أَعُوذُ بِٱلرَّحْمَٰنِ مِنكَ إِن كُنتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾

(१९) (उसने) कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ संदेशवाहक हूँ, तुझे एक पवित्र बालक देने आया हूँ।

قَالَ إِنَّمَآ أَنَا۠ رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾

(२०) कहने लगीं कि भला मेरे यहाँ बालक कैसे हो सकता है ? मुझे तो किसी पुरूष का हाथ तक स्पर्श नहीं हुआ तथा न मैं व्यभचारी हूँ।

قَالَتْ أَنَّىٰ يَكُونُ لِى غُلَٰمٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِى بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

(२१) उसने कहा बात तो यही है,[1] (परन्तु) तेरे प्रभु का आदेश है कि वह मुझ पर अति सरल है, हम तो उसे लोगों के लिए एक प्रतीक बना देंगे[2]

قَالَ كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَلِنَجْعَلَهُۥٓ ءَايَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا

अल्लाह के आदेशानुसार गर्भ धारण हो गया। इसलिए प्रदान को अपने से सम्बन्धित किया।

[1]अर्थात यह बात तो सत्य है कि तुझे किसी पुरूष ने स्पर्श नहीं किया, उचित रूप से अथवा अनुचित रूप से जबकि गर्भ धारण के लिए स्वाभाविक रूप से यह आवश्यक है।

[2]अर्थात मैं सामान्य साधनों के लिए बाध्य नहीं हूँ। मेरे लिए यह बिल्कुल सरल है तथा हम उसे अपने सामर्थ्य की एक निशानी बनाना चाहते हैं। इससे पूर्व हमने तुम्हारे पिता आदम को बिना स्त्री अथवा पुरूष के पैदा किया, तथा तुम्हारी माता हव्वा को बिना स्त्री के केवल पुरूष से तथा सभी सृष्टि के जीवधारियों को स्त्री तथा पुरूष के योग से जन्म दिया, तथा अब ईसा को जन्म देकर चौथी अवस्था में भी पैदा करके अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन करना चाहते हैं तथा वह है केवल स्त्री के गर्भ से बिना पुरूष के पैदा कर देना। हम उत्पत्ति की चारों रूपों पर सामर्थ्य रखते हैं।

وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

तथा अपनी विशेष कृपा,[1] यह तो एक निर्धारित बात है ।[2]

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

(२२) फिर वह गर्भवती हो गयीं तथा इसी कारण वह एकाग्र होकर एक दूर स्थान पर चली गयीं ।

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَا لَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنتُ نَسْيًا مَّنسِيًّا ﴿٢٣﴾

(२३) फिर उसे प्रसव पीड़ा एक खजूर के वृक्ष के तने के नीचे ले आयी तथा सहसा मुख से निकल गया कि हाय, मैं इससे पूर्व मर गयी होती तथा लोगों की याद से भूली बिसरी हो जाती ।[3]

فَنَادَاهَا مِن تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

(२४) इतने में उसे नीचे से ही आवाज दी कि निराश न हो, तेरे प्रभु ने तेरे पाँव के नीचे एक जल स्रोत प्रवाहित कर दिया है ।

---

[1]इससे तात्पर्य नबूअत है, जो अल्लाह की विशेष कृपा है तथा उनके लिए भी जो इस नबूअत पर ईमान लायेंगे ।

[2]यह उसी कथन का परिशिष्ट है जो जिब्रील ने अल्लाह की ओर से वर्णन किया है । अर्थात यह चमत्कारिक उत्पत्ति तो अल्लाह के ज्ञान तथा उसकी चाहत एवं सामर्थ्य में निर्धारित है ।

[3]मृत्यु की कामना इस भय से की कि मैं बालक की समस्या पर लोगों को किस प्रकार शान्त कर सकूंगी जबकि मेरी बात मानने को कोई तैयार ही नहीं होगा । तथा यह विचार भी स्वभाविक था कि कहाँ मेरी प्रसिद्धि एक इबादत करने वाली तथा पवित्र के रूप में है तथा उसके पश्चात मैं लोगों की दृष्टि में व्यभिचारणी ठहरूंगी ।

وَهُزِّيٓ إِلَيْكِ بِجِذْعِ ٱلنَّخْلَةِ تُسَٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा उस खजूर के तने को अपनी ओर हिला, यह तेरे समक्ष ताज़ा पकी खजूरें गिरा देगा ।[1]

فَكُلِى وَٱشْرَبِى وَقَرِّى عَيْنًا ۖ فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ ٱلْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِىٓ إِنِّى نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ ٱلْيَوْمَ إِنسِيًّا ﴿٢٦﴾

(२६) अब निश्चित होकर खा पी तथा आँखें ठंडी रख,[2] यदि तुझे कोई मनुष्य दिखायी दे तो कह देना[3] कि मैंने अल्लाह कृपालु के नाम का व्रत रखा है । मैं आज किसी व्यक्ति से बात न करूँगी ।

فَأَتَتْ بِهِۦ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُۥ ۖ قَالُوا۟ يَٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

(२७) अब (आदरणीय ईसा) को लिए हुए वह अपने समुदाय में आयीं । सबने कहा कि मरियम तूने बहुत कुकर्म किया ।

يَٰٓأُخْتَ هَٰرُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ ٱمْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

(२८) हे हारून की बहन ![4] न तो तेरा पिता बुरा आदमी था न तेरी माता व्यभिचारिणी थी ।

---

[1] سريا छोटी नदी अथवा पानी के स्रोत को कहते हैं । अर्थात चमत्कार स्वरूप तथा अस्वभाविक रूप से अल्लाह तआला ने आदरणीय मरियम के चरणों के तले, पीने का पानी तथा खाने के लिए सूखे हुए वृक्ष से पकी हुई ताज़ा खजूरों का प्रबन्ध कर दिया । आवाज़ देने वाले आदरणीय जिब्रील थे जिन्होंने घाटी के नीचे से आवाज दी तथा कहा जाता है कि سري सरदार के अर्थों में है तथा इससे तात्पर्य ईसा अलैहिस्सलाम हैं, उन्होंने ही आदरणीया मरियम को नीचे से आवाज़ दी थी ।

[2]अर्थात खजूरें खा, स्रोत का पानी पी तथा बालक को देखकर आँखें ठंडी कर ।

[3]यह कहना भी संकेत से था मुख से नहीं । इसके अतिरिक्त उनके यहाँ व्रत का अर्थ ही खाने तथा बोलने से परहेज़ था ।

[4]हारून से तात्पर्य सम्भव है उनका कोई भाई हो, यह भी सम्भव है कि हारून से तात्पर्य हारून रसूल (मूसा के भाई) ही हों तथा अरबों की भाँति उनका सम्बन्ध हारून की ओर कर दिया । जैसा कहा जाता है يا أخا تميم، يا أخا العرب आदि अथवा अल्लाह के भय,

(२९) (मरियम ने) अपने बच्चे की ओर संकेत किया। सब कहने लगे कि लो भला हम गोद के बालक से बातें कैसे करें ?

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَن كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

(३०) (बालक) बोल उठा कि मैं अल्लाह तआला का भक्त हूँ। उसने मुझे किताब प्रदान की है तथा मुझे अपना दूत (पैग़म्बर) बनाया है।[1]

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ﴿٣٠﴾

(३१) तथा उसने मुझे शुभ बनाया है[2] जहाँ भी मैं रहूँ तथा उसने मुझे नमाज़ तथा ज़कात का आदेश दिया है, जब तक भी मैं जीवित रहूँ।

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾

(३२) तथा उसने मुझे अपनी माता का सेवक बनाया है [3] तथा मुझे क्रूर तथा हतभाग नहीं किया।[4]

وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾

पवित्रता तथा इबादत में आदरणीय हारून की तरह उन्हें समझते हुए उन्हें उपमा तथा समानता के आधार पर हारून की बहन कहा गया हो, इसके उदाहरण क़ुरआन करीम में भी विद्यमान हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]अर्थात निश्चित ज्ञान में ही अल्लाह ने मेरे लिए निर्णय कर दिया है कि वह मुझे किताब तथा नबूअत से सुशोभित करेगा।

[2]अल्लाह के धर्म में दृढ़ता, अथवा प्रत्येक वस्तु में अधिकता, उच्चता एवं सफलता मेरे सौभाग्य में है अथवा लोगों के लिए लाभकारी, शुभचिन्तक अथवा मान्य बातों का आदेश देने वाला तथा बुराई से रोकने वाला। (फतहुल क़दीर)

[3]केवल माता के साथ सद्व्यवहार के वर्णन से भी स्पष्ट है कि आदरणीय ईसा का जन्म बिना पिता के एक चमत्कारिक प्रतिष्ठा का द्योतक है वरन् आदरणीय ईसा भी, आदरणीय यहया की तरह برا بوالديه (माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करने वाला) कहते, यह न कहते कि माता के साथ सद्व्यवहार करने वाला हूँ।

[4]इसका अर्थ यह है कि जो माता-पिता की सेवा करने वाला तथा आज्ञा पालन करने वाला नहीं होता, उसकी प्रकृति में क्रूरता तथा भाग्य में दुर्भाग्य लिखा है। आदरणीय ईसा

وَالسَّلٰمُ عَلَیَّ یَوْمَ وُلِدْتُّ وَیَوْمَ اَمُوْتُ وَیَوْمَ اُبْعَثُ حَیًّا ﴿٣٣﴾

(३३) तथा मुझ पर मेरे जन्म के दिन तथा मेरी मृत्यु के दिन तथा जिस दिन कि मैं पुन: जीवित खड़ा किया जाऊँगा सलाम ही सलाम है।

ذٰلِكَ عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِیْ فِیْهِ یَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) यह है सत्य कथा ईसा पुत्र मरियम की, यही है वह सत्य बातें जिसमें लोग शंका तथा संदेह में लिप्त हैं।[1]

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ یَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰۤی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿٣٥﴾ؕ

(३५) अल्लाह के लिए संतान का होना उचित नहीं, वह तो अत्यन्त शुद्ध है, वह तो किसी कार्य के करने का विचार करता है तो उसे कहता है कि हो जा, वह उसी समय हो जाता है।[2]

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿٣٦﴾

(३६) मेरा तथा तुम सबका प्रभु अल्लाह तआला ही है। तुम सब उसी की उपासना (इबादत) करो, यही सीधा मार्ग है।

ने सभी बातों को भूतकाल में किया है, जबकि उनका सम्बन्ध भविष्यकाल से था, क्योंकि अभी तो वह नवजात शिशु ही थे। यह इसलिए कि ये अल्लाह के द्वारा लिखे हुए भाग्य के ऐसे अटल निर्णय थे कि यद्यपि यह प्रदर्शित नहीं हुए थे, परन्तु उनका प्रदर्शित होना उसी प्रकार निश्चित था जिस प्रकार भूतकाल में घटित घटनायें शंका व संदेह से परे होती हैं।

[1]अर्थात ये हैं वे गुण जिनसे आदरणीय ईसा सुशोभित किये गये थे न कि उन गुणों से युक्त थे जो इसाईयों ने अतिश्योक्ति का प्रयोग करके उनके विषय में मनवायीं तथा न ऐसे जो यहूदियों ने कमियों तथा त्रुटियों से कार्य लेते हुए उनके विषय में कहा तथा यही वात सत्य है, जिसमें लोग बेकार संदेह करते हैं।

[2]जिस अल्लाह की यह महिमा तथा सामर्थ्य हो, उसे भला सन्तान की क्या आवश्यकता ? तथा उसके लिए बिना पिता के जन्म दे देना कौन-सा कठिन कार्य है ? अर्थात जो अल्लाह के लिए सन्तान सिद्ध करते हैं अथवा आदरणीय ईसा के चमत्कारी जन्म को अस्वीकार करते हैं, वे वास्तव में अल्लाह के सामर्थ्य तथा शक्ति को अस्वीकार करते हैं।

(३७) फिर (ये) गुट आपस में मतभेद करने लगे ।[1] परन्तु काफ़िरों के लिए (विनाश) दुख है एक बड़े दिन के आ जाने से ।[2]

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٧﴾

(३८) क्या खूब देखने सुनने वाले होंगे उस दिन जबकि हमारे समक्ष उपस्थित होंगे[3] परन्तु आज तो ये अत्याचारी लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं ।

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا ۖ لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

(३९) तथा तू उन्हे इस दुख एवं निराशा के दिन का डर[4] सुना दे जबकि कार्य अन्त को पहुँचा

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ

---

[1]यहाँ الأحـــــزاب से तात्पर्य अहले किताब के गुट तथा स्वयं ईसाइयों के गुट हैं जिन्होंने आदरणीय ईसा के विषय में आपस में मतभेद किया । यहूदियों ने कहा कि वह जादूगर तथा व्यभिचार से जन्मा पुत्र है अर्थात यूसुफ बढ़ई के पुत्र हैं, इसाईयों के प्रोटेस्टेन्ट गुट ने कहा कि वह अल्लाह के पुत्र हैं, कैथोलिक गुट ने कहा वह तीन भगवानों में से तीसरे हैं तथा तीसरे आर्थोडिक्स गुट ने कहा, वह भगवान हैं । इस प्रकार यहूदियों ने निन्दा तथा त्रुटि किया तथा ईसाइयों ने अत्यधिक अतिश्योक्ति से काम लिया । (ऐसरूत्तफ़ासीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[2]उन काफ़िरों के लिए जिन्होंने ईसा के विषय में इस प्रकार मतभेद तथा अतिश्योकित एवं विरोध का कार्य किया, क़ियामत वाले दिन जब वहाँ उपस्थिति होंगे, विनाश है ।

[3]यह विस्मय के भाव में है अर्थात दुनिया में तो सत्य को देखने तथा सुनने से अंधे तथा बहरे रहे, परन्तु आख़िरत में यह क्या भली-भाँति देखने तथा सुनने वाले होंगे ? परन्तु वहाँ यह देखना तथा सुनना किस काम का ?

[4]क़ियामत के दिन को पश्चाताप का दिन कहा, इसलिए कि उस दिन सभी पश्चाताप करेंगे । कुकर्मी शोक करेंगे कि यदि उन्होंने बुराईयाँ न की होती, तथा सत्कर्मी यह अनुताप करेंगे कि उन्होंने और पुण्य क्यों नहीं कमाया ?

الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾

दिया[1] जायेगा तथा ये लोग अचेत तथा बेईमानी में ही रह जायेंगे।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾

(४०) नि:संदेह धरती के तथा धरतीवासियों के संरक्षक हम ही होंगे तथा सब लोग हमारी ओर लौटाकर लाये जायेंगे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ﴿٤١﴾

(४१) इस किताब में इब्राहीम (की कथा) का वर्णन कर, नि:संदेह वह अति सत्यवादी पैग़म्बर (ईशदूत) थे।[2]

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾

(४२) जबकि उसने अपने पिता से कहा के हे पिता ! आप उनकी पूजा क्यों कर रहे हैं जो न सुन सकें न देखें न आपको कुछ लाभ पहुँचा सकें ?

---

[1]अर्थात हिसाब-किताब करके पोथियाँ लपेट दी जायेंगी तथा स्वर्ग में जाने वाले स्वर्ग में तथा नरक में जाने वाले नरक में चले जायेंगे। हदीस में आता है कि उसके पश्चात मृत्यु को भेड़ के रूप में लाया जायेगा तथा स्वर्ग तथा नरक के मध्य खड़ा कर दिया जायेगा, स्वर्गवालों तथा नरकवालों दोनों से पूछा जायेगा, इसे पहचानते हो, यह क्या है ? वे कहेंगे हाँ, यह मृत्यु है फिर उनके समक्ष उसे वध कर दिया जायेगा तथा घोषणा कर दी जायेगी, हे स्वर्ग में रहने वालो ! तुम्हारे लिए स्वर्ग का जीवन सदैव के लिए है, अब मृत्यु नहीं आयेगी। नरक वालों से कहा जायेगा, हे नरकवालो ! तुम्हारे लिए नरक की यातना स्थाई है, अब मृत्यु नहीं आयेगी। (सहीह बुख़ारी, *तफ़सीर सूर: मरियम* तथा सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न: बाबुन नार, यदख़ुलुहा अल-जब्बारून)

[2] صِدِّيق (सिद्दीक) صِدْق (सत्यता) से अतिश्योक्ति का रूप है अर्थात बड़ा सत्यवादी। صديقيت का यह स्थान, नबूअत के पश्चात सर्वश्रेष्ठ है प्रत्येक नबी तथा रसूल अपने समय का सब से बड़ा सत्यभाषी तथा सदाचारी होता है, इसलिए वह (सिद्दीक) भी होता है। फिर भी प्रत्येक सत्यावादी नबी नहीं होता। क़ुरआन करीम में आदरणीया मरियम को صِدِّيقَة (सिद्दीका) कहा गया है, जिसका अर्थ यह है कि वह अल्लाह के भय, पवित्रता तथा सत्यवादी में अति उच्च पद पर आसीन थीं, फिर भी नबिया नहीं थीं। मुसलमानों में आदरणीय अबू बक्र सिद्दीकीन में से हैं जो नबियों के पश्चात मुसलमानों में पुरूषोत्तम माने गये हैं।

(४३) हे (मेरे प्रिय) पिता ! (आप देखिए) मेरे पास वह ज्ञान आया है, जो आपके पास आया ही नहीं,[1] तो आप मेरी ही मान लीजिए मैं बिल्कुल सीधे मार्ग की ओर आप का पथ-प्रर्दशन करूँगा ।[2]

يَٰٓأَبَتِ إِنِّى قَدْ جَآءَنِى مِنَ ٱلْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَٱتَّبِعْنِىٓ أَهْدِكَ صِرَٰطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾

(४४) मेरे पिता ! आप शैतान की पूजा करने से रूक जायें, शैतान तो कृपा तथा दया करने वाले अल्लाह की अत्यधिक अवहेलना करने वाला है ।[3]

يَٰٓأَبَتِ لَا تَعْبُدِ ٱلشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾

(४५) हे पिता ! मुझे भय लग रहा है कि कहीं आप पर अल्लाह का कोई प्रकोप न आ पड़े कि आप शैतान के मित्र बन जायें ।[4]

يَٰٓأَبَتِ إِنِّىٓ أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ ٱلرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾

---

[1]जिससे मुझे आत्मज्ञान तथा अल्लाह का विश्वास प्राप्त हुआ, पुनर्जीवन तथा अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों के पुजारियों के लिए स्थाई यातना का ज्ञान हुआ ।

[2]जो आपको स्थाई सौभाग्य तथा मोक्ष प्राप्त करा देगी ।

[3]अर्थात शैतान के भ्रमजाल तथा उसके भटकावे से आप जो ऐसी मूर्तियों की पूजा करते हैं, जो न सुनने-देखने की शक्ति रखती है न लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य, तो यह वास्तव में शैतान की पूजा है, जो अल्लाह का अवज्ञाकारी है तथा अन्यों को भी अल्लाह का अवज्ञाकारी बनाकर उनको अपने जैसा बनाने में लगा रहता है ।

[4]यदि आप अपने कुफ्र तथा शिर्क पर अडिग रहे तथा इसी अवस्था में आपकी मृत्यु हो गयी, तो अल्लाह की यातना से आपको कोई भी नहीं बचा सकता । अथवा दुनिया में ही अल्लाह की यातना का शिकार न हो जायें । आदरणीय इब्राहीम ने पिता के सम्मान तथा आदर के सभी नियमों को पूर्णरूप से सुरक्षित रखते हुए अत्यधिक नम्रता एवं प्रेम के शब्दों में एकेश्वरवाद का भाषण सुनाया । परन्तु एकेश्वरवाद का यह पाठ कितने ही कोमल एवं मधुर भाव से वर्णन किया जाये मूर्तिपूजक के लिए असहनीय होता ही है । अत: मूर्तिपूजक पिता ने इस कोमलता तथा प्रेम के उत्तर में अति कटुता तथा कठोरता के साथ एकेश्वरवादी पुत्र को कहा कि यदि तू मेरे देवताओं से मुख मोड़ने से न रूका तो मैं तुझे पत्थरों से मारकर मार डालूँगा ।

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ لَئِن لَّمْ تَنتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا

(४६) (उसने) उत्तर दिया कि हे इब्राहीम ! क्या तू हमारे देवताओं से मुख फेर रहा है, (सुन) यदि तू न रूका तो मैं तुझे पत्थरों से मार डालूँगा। जा एक लम्बी अवधि तक मुझ से[1] अलग रह।

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا

(४७) कहा अच्छा तुम पर सलाम हो,[2] मैं तो अपने प्रभु से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा।[3] वह मुझ पर असीम कृपा कर रहा है।

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُو رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا

(४८) तथा मैं तो तुम्हें भी तथा जिन-जिन को तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, उन्हें भी (सबको) छोड़ रहा हूँ केवल अपने प्रभु को पुकारता रहूँगा, मुझे विश्वास है कि मैं अपने प्रभु से प्रार्थना करने में असफल नहीं हूँगा।

---

[1] مليـا लम्बी अवधि, एक काल। दूसरा अर्थ इसका सुरक्षित किया गया है। अर्थात मुझे मेरी अवस्था पर छोड़ दे कहीं मुझसे अपने हाथ पैर न तोड़वा लेना।

[2]यह सलाम अभिवादन के रूप में नहीं है जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को करता है, बल्कि यह सम्बोधन समाप्त करने का प्रदर्शन है। जैसे

﴿وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا﴾

"जब मूर्ख लोग उनसे बातें करते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है।" (सूरः *अल-फ़ुरकान*-६३)

में ईमान वालों तथा अल्लाह के भक्तों का आचरण बताया गया है।

[3]यह उस समय कहा था जब आदरणीय इब्राहीम को मूर्तिपूजक के लिए मोक्ष की प्रार्थना करने के निषेधित होने का ज्ञान नहीं था, जब यह ज्ञात हुआ तो आपने यह प्रार्थना करने का क्रम समाप्त कर दिया। (*सूरः अल-तौबा*-११४)

(४९) जब (इब्राहीम) उन सबको तथा अल्लाह के अतिरिक्त उनके सब देवताओं को छोड़ चुके तो हमने उन्हें इसहाक़, तथा याक़ूब प्रदान किये[1] तथा प्रत्येक को नबी बना दिया।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

(५०) तथा उन सबको हमने अपनी बहुत-सी कृपा प्रदान की[2] तथा हमने उनकी शुभचर्चा को सर्वोच्च कर दिया।[3]

وَوَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

(५१) इस किताब में मूसा का भी वर्णन कर, जो निर्वाचित[4] तथा रसूल एवं नबी था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

---

[1] يعقوب (याक़ूब) आदरणीय इसहाक़ के पुत्र अर्थात आदरणीय इब्राहीम के पौत्र थे। अल्लाह तआला ने उनका भी वर्णन पुत्र के साथ तथा पुत्र की ही तरह किया है। अर्थ यह है कि जब इब्राहीम अल्लाह के एकेश्वरवाद के विषय में पिता को, घर को तथा अपने प्रिय देश को छोड़कर क़ुदस के क्षेत्र की ओर प्रस्थान कर गये, तो हमने उन्हें इसहाक़ तथा याक़ूब प्रदान किये ताकि उनका प्रेम, पिता के बिछड़ने का शोक भुला दे।

[2]अर्थात दूतत्व (नबूअत) के अतिरिक्त अन्य बहुत-सी अनुकम्पायें उन्हें प्रदान कीं। जैसे धन, सन्तान तथा फिर उसके वंश में अधिक समय तक नबूअत प्रदान करने का क्रम निरन्तर रखना, यह सबसे बड़ी कृपा थी, जो उन पर हुई। इसीलिए आदरणीय इब्राहीम नबियों के पिता अथवा नबियों के पूर्वज कहलाते हैं।

[3] لسان صدق सत्य वचन से तात्पर्य उत्तम प्रशंसा तथा शुभ बातें हैं। लिसान (जिह्वा) का सम्बन्ध सिद्क से किया फिर उसकी उच्चता के गुण का वर्णन किया, जिससे उस ओर संकेत किया कि भक्तों के मुख पर जो उनका उत्तम वर्णन रहता है, तो वास्तव में वह उसके पात्र हैं। अत: देख लीजिए कि सभी आकाशीय धर्मों के अनुयायी बल्कि मूर्तिपूजक भी आदरणीय इब्राहीम तथा उनकी सन्तान का वर्णन बड़े अच्छे शब्दों में तथा अत्यधिक आदर एवं सम्मान से करते हैं। यह नबूअत तथा सन्तान के पश्चात एक अन्य प्रदान है जो अल्लाह के मार्ग में स्थानान्तरण के कारण प्राप्त हुआ।

[4] مخلص، مصطفى، مجتبى तथा مختار चारों शब्दों समार्थ हैं। अर्थात रिसालत तथा पैग़म्बरी के लिए चुना हुआ, प्रिय व्यक्ति, रसूल, संदेशवाहक के अर्थ में है (भेजा हुआ) तथा नबी का अर्थ है अल्लाह का संदेश लोगों को सुनाने वाला, अथवा अल्लाह की प्रकाशना की सूचना देनेवाला, फिर भी दोनों का अर्थ एक ही है कि अल्लाह जिस भक्त

(५२) हमने उसे तूर पर्वत के दायें किनारे से आकाशवाणी दी तथा गुप्त मंत्रण करते हुए उसे समीप कर लिया।

وَنَادَيْنَٰهُ مِن جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

(५३) तथा अपनी विशेष कृपा से उसके भाई हारून को नबी बना कर प्रदान किया।

وَوَهَبْنَا لَهُۥ مِن رَّحْمَتِنَآ أَخَاهُ هَٰرُونَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

(५४) तथा इस किताब में इस्माईल (की कथा) भी स्मरण कर, वह बड़ा ही वचन का पक्का था तथा था भी रसूल एवं नबी।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ إِسْمَٰعِيلَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾

(५५) तथा वह अपने परिवार वालों को निरन्तर नमाज़ तथा ज़कात (धर्मदान) का आदेश देता था तथा था भी अपने प्रभु के सदन में प्रिय तथा स्वीकृत।

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُۥ بِالصَّلَوٰةِ وَالزَّكَوٰةِ وَكَانَ عِندَ رَبِّهِۦ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

(५६) तथा इस किताब में इदरीस को भी स्मरण करो वह भी सत्यवादी ईशदूत (पैग़म्बर) था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ إِدْرِيسَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾

(५७) हमने उसे उच्च स्थान पर उठा लिया।[1]

وَرَفَعْنَٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾

को लोगों के मार्गदर्शन देने तथा सचेत करने के लिए चुन लेता है तथा उसे अपनी प्रकाशना से सुसज्जित करता है, उसे रसूल तथा नबी कहा जाता है। प्राचीन काल से विद्वानों में यह मतभेद चला आ रहा है कि इन दोनों में अन्तर है कि नहीं ? यदि है तो वह क्या है ? अन्तर बताने वाले सामान्य रूप से कहते हैं कि धार्मिक नियमों अथवा जिनको आकाशीय पुस्तक प्रदान की गयी है, उन्हें रसूल तथा नबी कहते हैं तथा जो संदेशवाहक अपने पूर्व के संदेशवाहक की किताब अथवा धार्मिक नियमों के अनुसार ही लोगों को अल्लाह का संदेश पहुँचाता है, वह केवल नबी है रसूल नहीं, परन्तु क़ुरआन करीम में इनका प्रयोग एक-दूसरे पर भी हुआ है तथा कुछ स्थानों पर एक-दूसरे के प्रतिकूल भी आये हैं। जैसे सूरः अल हज्ज आयत ५२ में।

[1]आदरणीय इदरीस, कहते हैं कि आदरणीय आदम के पश्चात प्रथम नबी थे तथा आदरणीय नूह के अथवा उनके पिता के दादा थे, उन्होंने सर्वप्रथम वस्त्र सीना शुरू किया। مكانا عليا (उच्च स्थान) से क्या तात्पर्य है ? कुछ व्याख्याकारों ने इसकी व्याख्या رُفع إلى السماء

(५८) यही वे नबी हैं जिन पर अल्लाह तआला ने दया तथा कृपा की, जो आदम की संतान में से हैं तथा उन लोगों के वंश से हैं, जिन्हें हमने नूह के साथ नाव पर चढ़ा लिया था तथा इब्राहीम तथा याकूब की सन्तान से तथा हमारी ओर से मार्गदर्शन प्राप्त एवं हमारे प्रिय लोगों में से। इनके समक्ष जब अल्लाह कृपालु की आयतें पढ़ी जाती थीं, ये दण्डवत (सजदा) करते तथा रोते गिड़गिड़ाते गिर पड़ते थे।[1]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ مِن ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِن ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَٰنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ۩ ﴿٥٨﴾

(५९) फिर उनके पश्चात ऐसे कपूत पैदा हुए कि उन्होंने नमाज़ बर्बाद कर दी तथा मनोकांक्षा के पीछे पड़ गये। अत: उनकी हानि उनके समक्ष आयेगी।[2]

فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ ۖ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

समझा है कि आदरणीय ईसा की भाँति उन्हें भी आकाश पर उठा लिया गया। परन्तु क़ुरआन के शब्द इस भावार्थ के लिए प्रष्ट नहीं हैं तथा किसी सहीह हदीस में भी इसका वर्णन नहीं हुआ। परन्तु इस्राईली कथाओं में उनको आकाश पर उठाने का वर्णन मिलता है, जो इस भावार्थ की पुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं है। इसलिए अधिक उचित बात यही प्रतीत होती है कि उससे तात्पर्य सम्मान तथा पदवी की वह उच्चता है जो नबूअत से सुशोभित करके उन्हें प्रदान की गई।

[1]अर्थात अल्लाह की आयतों को सुनकर मन की नम्रता तथा रोने के भाव का उत्पन्न हो जाना तथा अल्लाह की महिमा के आगे दण्डवत (सजदे) में हो जाना, अल्लाह के भक्तों का विशेष लक्षण हैं। सजदे के पाठ के लिए सुन्नत से सिद्ध प्रार्थना (दुआ) यह है।

«سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ».

(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी तथा नसाई ससंदर्भ मिश्कात, बाब सुजूदेल क़ुरआन) कुछ कथनों में अधिकता है فتبارك الله أحسن الخالقين (औनुल माबूद भाग १, पृष्ठ ५३३)

[2]अल्लाह के पुरस्कृत भक्तों का वर्णन करने के पश्चात उन लोगों का वर्णन किया जा रहा है जो उन के विपरीत अल्लाह के आदेशों का पालन करने में आलस्य तथा विमुखता करते

إِلَّا مَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَأُوْلَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ ٱلْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾

(६०) सिवाय उनके जो क्षमा माँग लें तथा ईमान ले आयें, तथा पुण्य के कार्य करें। ऐसे लोग स्वर्ग में जायेंगे तथा उनके अधिकारों का तनिक भी हनन न किया जायेगा।[1]

جَنَّٰتِ عَدْنٍ ٱلَّتِى وَعَدَ ٱلرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُۥ بِٱلْغَيْبِ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ وَعْدُهُۥ مَأْتِيًّا ﴿٦١﴾

(६१) स्थाई रूप से रहने वाले स्वर्गों में जिन का परोक्ष वचन[2] अल्लाह दयालु ने अपने भक्तों को दिया है। नि:संदेह उसका वचन पूर्ण होने वाला ही है।

لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَٰمًا ۖ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

(६२) वे लोग वहाँ कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे केवल सलाम ही सलाम सुनेंगे,[3] उनके लिए वहाँ प्रात: तथा सायं उनकी जीविका होगी।[4]

हैं। नमाज़ को व्यर्थ करने से तात्पर्य या तो पूर्ण रूप से से नमाज़ छोड़ देना है, जो कुफ़्र है अथवा उनके समय को व्यर्थ करना है अर्थात समय से नमाज़ न पढ़ना है, जब मन में आया पढ़ ली अथवा बिना किसी कारण के एकत्रित पढ़ना अथवा कभी दो कभी चार, कभी एक तथा कभी-कभी पाँचों नमाज़ें। यह भी सभी अवस्थायें नमाज़ को व्यर्थ करने की हैं, जिसका कर्ता बहुत बड़ा पापी है तथा आयत में चेतावनी के अनुसार दण्ड का भोगी हो सकता है। غيا का अर्थ विनाश, दुष्परिणाम है अथवा नरक की एक घाटी का नाम है।

[1]अर्थात जो क्षमा माँगकर नमाज़ के छोड़ने तथा मनमानी करने से रूक जायें एवं सुधार कर लें तथा ईमान एवं सदाचार की मांगों को पूरा करें तो ऐसे लोग उपरोक्त दुष्परिणाम से सुरक्षित तथा स्वर्ग के अधिकारी होंगे।

[2]अर्थात यह उनके ईमान तथा विश्वास की दृढ़ता है कि उन्होंने स्वर्ग को देखा भी नहीं, केवल अल्लाह के परोक्ष रूप से किये वचन पर ही उसकी प्राप्ति के लिए ईमान तथा अल्लाह के भय का मार्ग अपनाया।

[3]अर्थात फ़रिश्ते भी उन्हें हर प्रकार से सलाम करेंगे तथा स्वर्ग में रहने वाले आपस में अधिकाधिक सलाम करेंगे।

[4]इमाम अहमद ने इसकी व्याख्या में कहा है कि स्वर्ग में रात्रि तथा दिन नहीं होंगे, केवल प्रकाश ही प्रकाश होगा। हदीस में है, स्वर्ग में जाने वालों के प्रथम गुट के मुख चौदहवीं

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

(६३) यह है वह स्वर्ग जिसका उत्तराधिकारी हम अपने भक्तों में से उन्हें बनाते हैं जो अल्लाह से डरते हों।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

(६४) हम तेरे प्रभु के आदेश के बिना उतर ही नहीं सकते,[1] हमारे आगे-पीछे तथा उनके मध्य की सभी वस्तुयें उसी के स्वामित्व में हैं, तेरा प्रभु भूलने वाला नहीं।

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾

(६५) आकाशों का तथा धरती का एवं जो कुछ उनके मध्य है सबका प्रभु वही है, तू उसी की उपासना कर तथा उसकी आराधना (इबादत) पर अड़िग हो जा। क्या तेरे ज्ञान में उसका समनाम (तथा समान) कोई अन्य भी है।[2]

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

(६६) तथा मनुष्य कहता है[3] कि जब मैं मर जाऊँगा, तो क्या फिर जीवित करके निकाला

के चाँद की तरह प्रकाशमान होंगे, वहाँ उन्हें थूक आयेगा न नाक बहेगी तथा न मूत्र होगा एवं न मल त्याग ही होगा। उनके बर्तन तथा कंघियाँ स्वर्ण के होंगे, उनका शरीर सुगन्धित तथा उनका पसीना कस्तूरी (की भाँति) सुगन्धित होगा। प्रत्येक स्वर्ग में जाने वाले की दो पत्नियाँ होंगी, उनकी पिंडलियों का गूदा उनके मांस के पीछे से दिखायी देगा उनकी सुन्दरता तथा आकर्षण के कारण। उनमें आपस में द्वेष तथा बैर नहीं होगी, प्रातः तथा सायंकाल अल्लाह की प्रशंसा करेंगे। (सहीह बुख़ारी बदउल ख़लक़ बाब माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नः व इन्नहा मख़लूकतुन तथा सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नः बाब फ़ी सिफ़ातिल जन्नः व अहलेहा)

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार जिब्रील से अधिक तथा शीघ्र-शीघ्र भेंट करने की इच्छा व्यक्त की जिस पर यह आयत अवतरित हुई। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः मरियम)

[2]अर्थात नहीं है, जब उसके समतुल्य कोई अन्य नहीं तो फिर पूजा भी किसी अन्य की मान्य नहीं।

[3]मनुष्य से तात्पर्य यहाँ साधारण काफ़िर हैं, जो क़ियामत के घटित होने तथा मरने के पश्चात जीवित होने में विश्वास नहीं करते।

जाऊँगा ?[1]

(६७) क्या यह मनुष्य इतना भी याद नहीं रखता कि हमने उसे इससे पूर्व पैदा किया, हालाँकि वह कुछ भी न था ।[2]

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾

(६८) तेरे प्रभु की सौगन्ध ! हम उन्हें तथा शैतानों को एकत्रित करके अवश्य ही नरक के चारों ओर घुटनों के बल गिरे हुए उपस्थिति कर देंगे ।[3]

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

---

[1]प्रश्न इंकार के लिए है । अर्थात जब मैं सड़कर मिट्टी में मिल जाऊँगा, तो मुझे पुन: किस प्रकार नया रूप प्रदान किया जायेगा ? अर्थात ऐसा सम्भव नहीं ।

[2]अल्लाह तआला ने उत्तर दिया कि जब प्रथम बार बिना किसी नमूने के हमने मनुष्य को पैदा किया, तो पुन: पैदा करना हमारे लिए क्यों कठिन होगा ? प्रथम बार पैदा करना कठिन है अथवा पुन: उसे पैदा करना ? मनुष्य कितना नासमझ तथा स्वयं को भूल जाने वाला है ? इसी स्वयं को भूल जाने ने उसे अल्लाह से भुला दिया है ।

[3] جثي बहुवचन है جاث का, जो جثا يجثو से बना है । جاث घुटने के बल गिरने वाले को कहते हैं तथा यह स्थिति वाचक है । अर्थात हम पुन: उन्हीं को नहीं अपितु उन शैतानों को भी जीवित करेंगे, जिन्होंने उन्हें भटकाया था अथवा जिन की वे पूजा करते थे । फिर हम उन सबको इस अवस्था में नरक के निकट एकत्रित करेंगे कि यह महशर (एकत्रि होने का स्थान) की भयानकता हिसाब-किताब के भय से घुटनों के बल बैठे होंगे । हदीस कुदसी में है । अल्लाह तआला फ़रमाता है, "आदम की सन्तान मुझे झुठलाती है यद्यपि यह इसके योग्य नहीं । आदम की सन्तान मुझे दुख पहुँचाती है यद्यपि यह उसको शोभा नहीं देता । उसका मुझे झुठलाना यह है कि वह मेरे विषय मे यह कहता है कि अल्लाह कदापि इस प्रकार हमें पुन: जीवित नहीं करेगा जिस प्रकार उन्हें पहली बार पैदा किया यद्यपि मेरे लिए प्रथम बार पैदा करना दूसरी बार पैदा करने से अधिक सरल नहीं है (अर्थात कठिन यदि है तो प्रथम बार पैदा करना है, न कि दूसरी बार) तथा उसका मुझे दुख पहुँचाना यह है कि वह कहता है कि मेरी सन्तान है, यद्यपि मैं मात्र अकेला हूँ, मेरा कोई साथी नहीं, न मैंने किसी को जना न मुझको किसी ने जन्म दिया तथा मेरा कोई साझीदार नहीं है ।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: इख़्लास*)

(६९) हम फिर प्रत्येक समूह से उन्हें पृथक निकाल खड़ा करेंगे, जो अल्लाह दयालु से बहुत अकड़े-अकड़े से फिरते थे।[1]

ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾

(७०) फिर हम उन्हें भी भली-भाँति जानते हैं, जो नरक में प्रवेश के अधिक योग्य हैं।[2]

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾

(७१) तथा तुम में से प्रत्येक वहाँ अवश्य उपस्थिति होने वाला है, यह तेरे प्रभु के जिम्मे निश्चित निर्णय है।

وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾

(७२) फिर हम परहेज़गारों को बचा लेंगे तथा अवज्ञा करने वालों को उसी में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे।[3]

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

---

[1] عتيا भी عتا يعتو से عات का बहुवचन है। इसका अर्थ है अत्यधिक दुष्ट तथा अत्याचारी। अर्थ यह है कि प्रत्येक भटके हुए गुट के प्रमुख उद्दण्डियों एवं नेताओं को हम अलग कर लेंगे तथा उन्हें एकत्रित करके नरक में झोंक देंगे। क्योंकि ये नेता अन्य नरक में जाने वालों की तुलना में दण्ड तथा यातना के अधिक अधिकारी हैं जैसाकि अगली आयत में है।

[2] صليا सुना हुआ धातु है صلى तथा يصلي का, अर्थ प्रवेश करना है। अर्थात नरक में प्रवेश करने तथा उसमें भस्म होने के कौन सबसे अधिक अधिकारी हैं, हम उन्हें भलीभाँति जानते हैं।

[3]इसकी व्याख्या सहीह हदीसों में इस प्रकार वर्णित है कि नरक के ऊपर एक पुल बनाया जायेगा, जिस पर से प्रत्येक ईमानवाले तथा काफ़िर को गुजरना होगा। ईमान वाले अपने-अपने कर्मों के अनुसार शीघ्र तथा देर से गुजर जायेंगे, कुछ तो पलक झपकते, कुछ बिजली तथा वायु की भाँति, कुछ पक्षियों की भाँति तथा कुछ अच्छे घोड़ों तथा सवारियों की भाँति गुज़र जायेंगे, इसी प्रकार कुछ पूर्ण सुरक्षित, कुछ घायल परन्तु पुल पार कर लेंगे, कुछ नरक में गिर पड़ेंगे जिन्हें बाद में सिफ़ारिश के द्वारा निकाला जायेगा। परन्तु काफ़िर उस पुल को पार करने में सफल नहीं होंगे तथा नरक में गिर जायेंगे। इसका समर्थन उस हदीस से भी होता है जिसमें आता है कि "जिसकी तीन सन्तानें बाल्य अवस्था में मरी होंगी उसे अग्नि नही छुयेगी, परन्तु प्रतिज्ञा की प्राप्ति के लिये"

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ ءَامَنُوٓا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾

(७३) तथा जब उनके समक्ष हमारी ज्योतिर्मय आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं (बताओ) हम तुम दोनों समूहों में किसका मान अधिक है तथा किस की बैठक (सभा) शोभनीय है ?[1]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَٰثًا وَرِءْيًا ﴿٧٤﴾

(७४) तथा हम तो उनसे पूर्व बहुत से समुदायों को ध्वस्त कर चुके हैं, जो संसाधन तथा नाम सम्मान में[2] इनसे कहीं अधिक थे।

قُلْ مَن كَانَ فِى الضَّلَٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ

(७५) कह दीजिए कि जो भटकावे में होता है, अल्लाह दयालु उसको अत्यधिक लम्बा अवसर देता है, यहाँ तक कि वे उन वस्तुओं को देख लें जिनका वादा किये जाते हैं, अर्थात प्रकोप अथवा क़ियामत को, उस समय उन्हें

(सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ तथा सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे) यह प्रतिज्ञा वही है जिसे इस आयत में حتما مقضيا (निश्चित निर्णय) कहा गया है। अर्थात इसका घटित होना नरक में पुल पर से गुज़रने तक ही सीमित होगा। (विस्तृत जानकारी के लिए देखें इब्ने कसीर तथा ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]अर्थात क़ुरआन के आमन्त्रण की तुलना यह मक्का के काफिर, निर्धन मुसलमानों तथा क़ुरैश के धनवानों तथा उनकी सभाओं एवं घरों से करते हैं कि मुसलमानों में अम्मार बिन यासिर, बिलाल, सुहैब जैसे निर्धन लोग हैं। उनका परामर्श गृह अर्कम (सहाबा के नाम) के घर ही रहे। जबकि काफ़िरों में अबूजहल, नदर बिन हारिस उतबा, शैबा जैसे धनवान हैं तथा उनका भव्य भवन एवं घर हैं, उनकी सभा का स्थान दारून्नदवह अत्यधिक भव्य है।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, दुनिया की यह चीज़ें ऐसी नहीं हैं कि उन पर गर्व किया जाये, अथवा उनको देखकर सत्य तथा असत्य के मध्य निर्णय किया जाये। यह वस्तुयें तुम से पूर्व के समुदाय के पास थीं, परन्तु सत्य को झुठलाने के कारण उनको नाश कर दिया गया। दुनिया के ये धन तथा साधन उन्हें अल्लाह के प्रकोप से नहीं बचा सके।

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا

ठीक प्रकार से ज्ञात हो जायेगा कि कौन बुरे पद वाला है तथा किसका जत्था कमज़ोर है ।[1]

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا

(७६) तथा मार्गदर्शन प्राप्त किये हुए लोगों को मार्गदर्शन में अल्लाह और बढ़ाता है ।[2] तथा शेष रहने वाले पुण्य तेरे प्रभु के निकट प्रतिफल के अनुरूप तथा परिणाम के अनुरूप अति उत्तम हैं ।[3]

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا

(७७) क्या तूने उसे भी देखा जिसने हमारी आयतों में अविश्वास किया तथा कहा कि मुझे तो धन तथा सन्तान तो अवश्य दी जायेगी ।

اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا

(७८) क्या वह परोक्ष का ज्ञान रखता है अथवा अल्लाह से कोई वचन ले चुका है ?

كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا

(७९) कदापि नहीं, यह जो कुछ कह रहा है, हम उसे अवश्य लिख लेंगे, तथा उसके लिए यातना बढ़ाते चले जायेंगे ।

---

[1]इसके अतिरिक्त ये वस्तुयें कुमार्गी तथा काफ़िरों (अधर्मियों) को अवसर प्रदान करने के लिए भी प्राप्त होती हैं, इसलिए इसकी कोई प्रमाणिकता नहीं है । मूल रूप से अच्छे तथा बुरे का पता उस समय चलेगा जब कर्म करने का अवसर समाप्त हो जायेगा तथा अल्लाह का प्रकोप उन्हें आ घेरेगा अथवा क़ियामत आ जायेगी । परन्तु उस समय का ज्ञान, कोई लाभ नहीं देगा क्योंकि वहाँ क्षति-पूर्ति तथा सुधार करने का कोई मार्ग न होगा ।

[2]इसमें एक अन्य नियम का वर्णन है कि जिस प्रकार से क़ुरआन से, जिनके दिलों में कुफ़्र तथा मिश्रणवाद का रोग है, उनके दुर्भाग्य तथा कुमार्गता में अधिकता होती है, उसी प्रकार ईमान वालों के दिलों में ईमान तथा मार्गदर्शन में दृढ़ता आती है ।

[3]इसमें निर्धन मुसलमानों को सांत्वना दी जा रही है कि काफ़िर तथा मूर्तिपूजक जिन धन तथा साधन पर गर्व करते हैं, वे सभी विनाश के घाट उतर जाने वाले हैं तथा तुम जो पुण्य के कार्य करते हो, वह सदैव स्थाई रहने वाले हैं, जिनका पुण्य तथा प्रतिफल तुम्हें अपने प्रभु के सदन में मिलेगा तथा उसका उत्तम बदला तथा लाभ तुम्हारी ओर लौटेगा ।

(८०) तथा यह जिन वस्तुओं के विषय में कह रहा है, उसे हम उसके पश्चात ले लेंगे। तथा यह अकेला ही हमारे समक्ष उपस्थिति होगा।[1]

وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوۡلُ وَيَاۡتِيۡنَا فَرۡدًا ﴿۸۰﴾

(८१) उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य देवता बना रखें हैं। कि वे उनके लिए सम्मान का कारण हों।

وَاتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوۡنُوۡا لَهُمۡ عِزًّا ﴿۸۱﴾

(८२) परन्तु ऐसा कदापि होगा नहीं, वे तो इनकी पूजा से मुकर जायेंगे, तथा उल्टे इनके शत्रु बन जायेंगे।[2]

كَلَّا ؕ سَيَكۡفُرُوۡنَ بِعِبَادَتِهِمۡ وَيَكُوۡنُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ ضِدًّا ﴿۸۲﴾

---

[1]इन आयतों के अवतरित होने के कारण में बताया गया है कि आदरणीय अम्र बिन अल-आस का पिता आस बिन वायल, जो इस्लाम का घोर शत्रु था। उसके ऊपर आदरणीय ख़ुबाब बिन अरत का ऋण था, जो लोहार का कार्य करते थे। आदरणीय ख़बाब ने उस से अपने धन की माँग की तो उसने कहा कि जब तक तू मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ कुफ्र नहीं करेगा, मैं तुझे तेरा धन नहीं दूँगा। उन्होनें कहा कि यह कार्य तो तू मरकर पुन: जीवित हो जाये तब भी नहीं करूँगा। उसने कहा फिर ऐसे ही सही, जब मुझे मरने के पश्चात पुन: उठाया जायेगा तथा वहाँ भी मुझे धन तथा सन्तान प्रदान किया जायेगा तो मैं वहाँ यह धन अदा कर दूँगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब ज़िक्रुल कैने वल हद्दाद, व तफ़सीर सूर: मरियम, सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियाम:, बाब सोवालिल यहूद अनिर् रूह) अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह जो दावा कर रहा है, क्या उसके पास परोक्ष का ज्ञान है कि वहाँ भी इसके पास धन तथा सन्तान होगी ? अथवा अल्लाह से उसकी कोई संधि है ? ऐसा कदापि नहीं है। ऐसा केवल मनगढ़न्त तथा अल्लाह का उपहास करना है, यह जिस धन तथा सन्तान की बात कर रहा है, उसके स्वामी तो हम हैं अर्थात मरने के उपरान्त ही उनसे उसका सम्बन्ध समाप्त हो जायेगा तथा हमारे सदन में यह अकेला आयेगा, न धन साथ होगा न सन्तान एवं न कोई अन्य जत्था। परन्तु यातना होगी, जो उसके लिए तथा उन जैसे अन्य लोगों के लिए हम बढ़ाते रहेंगे।

[2] عزا का अर्थ है यह देवता उनके लिए सम्मान का कारण तथा सहायक होंगे तथा ضدا का अर्थ है, शत्रु, झुठलाने वाले तथा उनके विरूद्ध अन्यों की सहायता करने वाले। अर्थात

(८३) क्या तूने नहीं देखा कि हम काफ़िरों के पास शैतानों को भेजते हैं, जो उन्हें ख़ूब उकसाते हैं ।[1]

أَلَمْ تَرَ أَنَّآ أَرْسَلْنَا ٱلشَّيَـٰطِينَ عَلَى ٱلْكَـٰفِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾

(८४) तू उनके विषय में शीघ्रता न कर, हम तो स्वयं ही इनके समय की गणना कर रहे हैं ।[2]

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

(८५) जिस दिन हम जितेन्द्रियों (परहेज़गारों) को अल्लाह दयालु के अतिथि बनाकर एकत्रित करेंगे ।

يَوْمَ نَحْشُرُ ٱلْمُتَّقِينَ إِلَى ٱلرَّحْمَـٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾

(८६) तथा पापियों को (अत्यधिक प्यास की अवस्था में) नरक की ओर हाँक ले जायेंगे ।[3]

وَنَسُوقُ ٱلْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾

(८७) किसी को सिफ़ारिश (अभिस्तावना)का अधिकार न होगा अतिरिक्त उनके जिन्होंने

لَّا يَمْلِكُونَ ٱلشَّفَـٰعَةَ إِلَّا مَنِ ٱتَّخَذَ

यह देवता उनके विचार के विपरीत उनके पक्षधर होने के बजाय उनके शत्रु, उनको झुठलाने वाले तथा उनके विरूद्ध होंगे ।

[1]अर्थात भटकाते तथा अवज्ञा की ओर खींचकर ले जाते हैं ।

[2]तथा जब वह अवसर समाप्त हो जायेगा, तो अल्लाह के प्रकोप के भोगी बन जायेंगे । आपको शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं है ।

[3] وفد बहुवचन है وافد का, जैसे ركب बहुवचन है راكب का अर्थ यह है कि उन्हें ऊंटों, घोड़ों पर सवार कराके अति सम्मान तथा आदर से स्वर्ग की ओर ले जाया जायेगा । وردا का अर्थ है प्यासे । इनके विपरीत अपराधियों को भूखा-प्यासा नरक में हाँक दिया जायेगा ।

عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

अल्लाह तआला की ओर से कोई वचन ले लिया है ।[1]

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾

(८८) तथा उनका कथन तो यह है कि अल्लाह दयालु ने भी सन्तान बना रखी है ।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾

(८९) नि:संदेह तुम बहुत (बुरी तथा) भारी वस्तु लाये हो ।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾

(९०) निकट है कि इस कथन के कारण आकाश फट जायें तथा धरती में दरार हो जाये तथा पर्वत कण-कण हो जायें ।

أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾

(९१) कि वे दयालु की सन्तान सिद्ध करने बैठे हैं ।[2]

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

(९२) तथा दयालु की यह शोभा नहीं कि वह सन्तान रखे ।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

(९३) आकाशों तथा धरती में जो भी हैं सब अल्लाह के दास बनकर ही आने वाले हैं ।[3]

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾

(९४) उन सब को उसने घेर रखा है तथा सब

---

[1]वचन एवं कथन (संधि) का अर्थ ईमान तथा अल्लाह का भय है । अर्थात ईमान वाले तथा अल्लाह के भय रखने वालों में से जिनको अल्लाह सिफ़ारिश करने की आज्ञा देगा, वही सिफ़ारिश करेंगे, उनके अतिरिक्त किसी को सिफ़ारिश करने की आज्ञा भी नहीं होगी ।

[2] إدًا का अर्थ भयानक बात तथा داهية (भारी वस्तु तथा बड़ी कठिनाई) के हैं । यह विषय पहले भी गुज़र चुका है कि अल्लाह की सन्तान कहना इतना बड़ा अपराध है कि इससे आकाश तथा धरती फट सकते हैं तथा पर्वत कण-कण हो सकते हैं ।

[3]जब सब अल्लाह के दास तथा उसके भक्त हैं तो फिर उसे सन्तान की क्या आवश्यकता है ? तथा यह उस के योग्य भी नहीं है ।

की पूर्णत: गणना भी कर रखा है ।[1]

(९५) ये सारे के सारे क़ियामत के दिन अकेले उसके समक्ष उपस्थिति होने वाले हैं ।[2]

وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

(९६) नि:संदेह जो ईमान लाये हैं तथा जिन्होंने सदाचार किये हैं, उनके लिए अल्लाह दयालु प्रेम उत्पन्न कर देगा ।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

(९७) हम ने (क़ुरआन को) तेरी भाषा में अति सरल कर दिया है[4] कि तू उस के द्वारा

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ

---

[1]अर्थात आदम से लेकर क़ियामत की प्रात: तक जितने भी मानव तथा दानव हैं, सभी की उसने गणना कर रखी है, सभी उसके बस तथा पकड़ में हैं, कोई उससे छुप कर रह ही नहीं सकता ।

[2] अर्थात कोई किसी का सहायक नहीं होगा, न धन ही वहाँ कुछ काम आयेगा ।

﴿ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴾

"उस दिन न धन लाभ देगा, न पुत्र ।" (सूर: *अल-शुअरा-८८*)

प्रत्येक व्यक्ति को अकेले अपना-अपना हिसाब देना होगा तथा जिनके विषय में मनुष्य दुनिया में यह समझता है कि यह मेरे पक्षधर तथा सहायक होंगे, वहाँ सब खो जायेंगे । कोई किसी की सहायता के लिए उपस्थित न होगा ।

[3]अर्थात संसार में लोगों के दिलों में उसके पुण्य तथा पवित्रता के कारण प्रेम उत्पन्न कर देगा । जैसा कि हदीस में आता है "जब अल्लाह तआला किसी (पुण्य करने वाले) भक्त को अपना प्रिय बना लेता है तो अल्लाह जिब्रील को कहता है, मैं अमुक भक्त से प्रेम करता हूँ, तू भी उससे प्रेम रख, तो जिब्रील भी उससे प्रेम रखना प्रारम्भ कर देते हैं । फिर जिब्रील आकाश पर उदघोषणा करते हैं कि अल्लाह तआला अमुक व्यक्ति से प्रेम करता है, तो सभी आकाश वाले भी इससे प्रेम करने लगते हैं, फिर धरती पर उसके लिए सम्मान तथा आदर रख दिया जाता है ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल अदब बाबुल मक़्ति मिनल्लाह तआला)

[4]क़ुरआन को सरल करने का अर्थ उस भाषा में उतारना जिसको पैग़म्बर जानता था अर्थात अरबी भाषा में । फिर इसके विषय का खुला हुआ, स्पष्ट एवं साफ होना है ।

الْمُتَّقِينَ وَتُنْذِرَ بِهِ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾

परहेज़गारों (सदाचारियों) को शुभ सूचना दे तथा झगड़ालू लोगों को[1] सतर्क कर दे।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

(९८) तथा हमने इससे पूर्व बहुत से समूह ध्वस्त कर दिये हैं, क्या उनमें से एक की भी आहट तू पाता है अथवा उनकी आवाज़ की भनक भी तेरे कान में पड़ती है।[2]

सूरतु ताहा-२०

سُورَةُ طه

सूरः ताहा* मक्के में उतरी तथा इसकी एक सौ पैंतीस आयतें हैं तथा आठ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

طه ﴿١﴾

(१) ता॰ हा॰

مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ ﴿٢﴾

(२) हमने यह क़ुरआन तुझ पर इसलिए नहीं उतारा कि तू कठिनाई में पड़ जा।[3]

---

[1] لدا बहुवचन है الد का जिसका अर्थ झगड़ालू है तात्पर्य काफ़िर तथा मूर्तिपूजक हैं।

[2]संवेदन का अर्थ है الإدراك بالحس ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ज्ञान करना। अर्थात क्या तू उनको आँखों से देख सकता अथवा हाथों से छू सकता है? प्रश्न इंकार के लिए है। अर्थात उनका अस्तित्व ही संसार में नहीं है कि तू उन्हें देख अथवा छू सके। ركز धीमे स्वर को कहते हैं अथवा उनकी धीमी ध्वनि ही तुझे कहीं से सुनाई दे सके।

*आदरणीय उमर के इस्लाम धर्म स्वीकार करने के विभिन्न कारण वर्णन किये गये हैं। कुछ ऐतिहासिक कथनों में अपनी बहन तथा बहनोई के घर में सूरः ताहा का सुनना तथा उससे प्रभावित होना भी वर्णित है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]इसका अर्थ यह है कि हमने क़ुरआन को इसलिए अवतरित नहीं किया कि तू उनके कुफ़्र (अविश्वास) पर एवं उनके ईमान न लाने पर चिन्तित होकर अपने आपको दुख में डाल ले, बल्कि हमने तो क़ुरआन को शिक्षा तथा चेतावनी के लिए उतारा है ताकि प्रत्येक

(३) बल्कि उसकी शिक्षा के लिए जो अल्लाह से डरता है।

إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ۝٣

(४) इसका उतारना उसकी ओर से है जिसने धरती को तथा उच्च आकाशों को पैदा किया है।

تَنزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَاوَاتِ الْعُلَى ۝٤

(५) जो दयालु है, अर्श पर स्थिर है।[1]

الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ ۝٥

(६) जिसका स्वामित्व आकाशों तथा धरती एवं इनके मध्य तथा धरती की सतह से नीचे प्रत्येक वस्तु पर है।[2]

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَىٰ ۝٦

(७) यदि तू उच्च बात कहे तो वह प्रत्येक गुप्त, अपितु गुप्त से गुप्त वस्तु को भली-भाँति जानता है।[3]

وَإِن تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۝٧

(८) वही अल्लाह है, जिस के अतिरिक्त कोई

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ

मनुष्य के दिल में हमारे एकेश्वरवाद की जो भावना छिपी हुई है, स्पष्ट तथा प्रकट हो जाये। अतः यहाँ شقاء खेद एवं थकान के अर्थ में है अर्थात दुख एवं थकावट।

[1] बिना किसी सीमा निर्धारण तथा अवस्था के वर्णन के, जिस प्रकार उसकी महिमा के योग्य है अर्थात अल्लाह तआला अर्श पर स्थिर है, परन्तु किस प्रकार तथा कैसे ? इसे कोई नहीं जानता।

[2] الثرى का अर्थ धरती की सबसे निचली तह अर्थात पाताल।

[3] अर्थात अल्लाह का स्मरण अथवा उससे प्रार्थना उच्च स्वर में करने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए कि वह तो छिपी क्या अत्यन्त छिपी हुई बात को भी जानता है अथवा اخفى का अर्थ है कि अल्लाह तो उन बातों को भी जानता है जिनको उसने भाग्य में लिख दिया है, परन्तु अभी तक लोगों से छुपा रखा है। अर्थात क़ियामत तक घटित होने वाली घटनाओं का उसे ज्ञान है।

لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ⑧

सत्य पूज्य नहीं, उत्तम नाम उसी के हैं ।[1]

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ⑨

(९) तुझे मूसा की घटना भी ज्ञात है ?

إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ⑩

(१०) जबकि उसने आग देखकर अपने परिवार वालों से कहा कि थोड़ी देर ठहर जाओ मुझे आग दिखाई दे रही है । अधिक सम्भव है कि मैं उसका अँगारा तुम्हारे पास लाऊँ अथवा आग के पास से मार्ग की सूचना पाऊँ ।[2]

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَا مُوسَىٰ ⑪

(११) जब वह वहाँ पहुँचे तो आकाशवाणी हुई[3] कि हे मूसा !

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ

(१२) नि:संदेह मैं ही तेरा प्रभु हूँ, तू अपने जूते

[1]अर्थात पूज्य भी वही है जो उपरोक्त गुणों से सुशोभित है तथा उत्तम नाम भी उसी के हैं जिनसे वह पुकारा जाता है । न आराध्य उसके अतिरिक्त कोई और है तथा न उसके जैसे उत्तम नाम ही किसी के हैं । अत: उसी की आज्ञा का पालन किया जाये ताकि मनुष्य जब उसके दरबार में वापस जाये तो वहाँ लज्जित न हो, बल्कि उसकी कृपा से प्रसन्न तथा प्रफुल्लित हो तथा उसकी प्रसन्नता से सफल हो ।

[2]यह उस समय की घटना है जब मूसा मदयन से अपनी पत्नी को लेकर (जो एक कथन के अनुसार आदरणीय शुऐब की सुपुत्री थीं) अपनी माता की ओर वापस जा रहे थे, अंधेरी रात थी तथा मार्ग भी अज्ञात था । तथा कुछ व्याख्याकारों के अनुसार उनकी पत्नी के प्रसव का समय निकट था तथा उन्हें गर्मी की आवश्यकता थी अथवा शीत के कारण गर्मी की आवश्यकता पड़ी हो । इतने में उन्हें दूर से आग के शोले उठते हुए दिखायी दिये । घरवालों से अर्थात पत्नी से (अथवा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि सेवक तथा बालक भी था इसलिए बहुवचन शब्द का प्रयोग किया) कहा तुम यहीं ठहरो ! शायद मैं आग का कोई शोला वहाँ से साथ ले आऊँ अथवा कम से कम वहाँ से मार्ग का संकेत मिल जाये ।

[3]मूसा जब अग्नि वाले स्थान पर पहुँचे तो वहाँ एक वृक्ष से (जैसाकि सूर: क़सस-३० में विस्तार से है) आवाज़ आयी ।

بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

उतार दे[1] क्योंकि तू पवित्र मैदान '*तोवा*'[2] में है।

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ ﴿١٣﴾

(१३) तथा मैंने तुझे चयन कर लिया है,[3] अब जो प्रकाशना (वह्यी) की जायेगी उसे ध्यान-पूर्वक सुन।

إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ﴿١٤﴾

(१४) नि:संदेह मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे अतिरिक्त इबादत (पूजा) के योग्य अन्य कोई नहीं, इसलिए तू मेरी ही इबादत कर[4] तथा मेरी याद के लिए नमाज़ की स्थापना कर।[5]

---

[1]जूते उतारने का आदेश इसलिए दिया कि इसमें विनम्रता का प्रदर्शन तथा आदर एवं सम्मान का पक्ष अधिक है, कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि वे ऐसे गधे की खाल के बने हुए थे, जो रंगी नहीं थी। क्योंकि जानवर की खाल रंगने के पश्चात ही पवित्र होती है, परन्तु यह कथन सत्य प्रतीत नहीं होता। रंगाई के बिना जूते किस प्रकार बन सकते हैं? अथवा घाटी की पवित्रता उसका कारण था, जैसाकि क़ुरआन के शब्दों से स्पष्ट है। फिर भी इसके दो पक्ष हैं। यह आदेश घाटी के सम्मान के लिए था अथवा इसलिए कि घाटी की पवित्रता का प्रभाव नंगे पैर होने की अवस्था में मूसा के अन्दर अधिक संचित हो।

[2]طوى घाटी का नाम है, (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात नबूअत एवं रिसालत तथा परस्पर बात करने के लिए।

[4]अर्थात धार्मिक दायित्व में यह सर्वप्रथम तथा सबसे महत्वपूर्ण आदेश है जिसका दायित्व प्रत्येक मनुष्य पर है। इसके अतिरिक्त जब पूज्य होने का अधिकारी भी वही है तो आराधना (इबादत) का अधिकार भी केवल उसी का है।

[5]इबादत के पश्चात नमाज़ का विशेष रूप से आदेश दिया। यद्यपि इबादत में नमाज़ भी सम्मिलित थी, ताकि उसका वह महत्व स्पष्ट हो जाये जैसाकि उसका है। لذكري का एक अर्थ यह है कि तू मुझे याद कर, इसलिए कि याद करने की विधि इबादत है और इबादतों में नमाज़ को विशेष महत्व तथा श्रेष्ठता प्राप्त है। दूसरा भावार्थ यह है कि जब भी मैं तुझे याद आ जाऊँ नमाज़ पढ़ अर्थात यदि किसी समय आलस्य, भूल अथवा निद्रा के प्रभाव के कारण ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो तो उससे निकलते ही तथा मेरी याद आते ही नमाज़ पढ़। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

(१५) क़ियामत अवश्य आने वाली है, जिसे मैं गुप्त रखना चाहता हूँ ताकि प्रत्येक व्यक्ति का वह बदला दिया जाये, जो उसने प्रयत्न किया हो।

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ⑮

(१६) तो अब इसके विश्वास से तुझे ऐसा व्यक्ति रोक न दे, जो इस पर ईमान (विश्वास) न रखता हो तथा अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा हो, वरन तू नाश हो जायेगा।[1]

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ ⑯

(१७) हे मूसा ! तेरे दाहिने हाथ में क्या है।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَا مُوسَىٰ ⑰

(१८) उत्तर दिया कि यह मेरी लाठी है, जिस पर मैं टेक लगाता हूँ तथा जिससे मैं अपनी बक़रियों के लिए पत्ते झाड़ लिया करता हूँ। अन्य भी इसमें मुझे अत्यधिक लाभ हैं।

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ⑱

(१९) कहा कि हे मूसा ! उसे (हाथ से) नीचे डाल दे।

قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ ⑲

(२०) डालते ही सर्प बन कर दौड़ने लगी।

فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ⑳

(२१) कहा कि निर्भय होकर उसे पकड़ ले, हम उसे उसी पूर्ववत रूप में पुनः ला देंगे।[2]

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ㉑

"जो नमाज़ से सो जाये, अथवा भूल जाये तो उसका प्रायश्चित यही है कि जब भी उसे याद आये पढ़ ले।" (सहीह बुख़ारी किताबुल मवाक़ीत, बाब मन नसेय सलातन फल योसल्ले एज़ा ज़करहा तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद बाब क़जायिस्सलातिल फ़ाएता)

[1]इसलिए कि आख़िरत पर विश्वास करने से अथवा उसके स्मरण एवं ध्यान से मुख मोड़ना दोनों ही बातें विनाश का कारण हैं।

[2]यह आदरणीय मूसा को चमत्कार प्रदान किया गया जो 'मूसा की छड़ी' के नाम से प्रसिद्ध है।

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा अपना हाथ अपनी काँख (बगल) में डाल ले, तो वह सफ़ेद प्रकाशमान होता हुआ निकलेगा। परन्तु बिना किसी दोष तथा रोग के[1] यह दूसरा चमत्कार है।

لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٣﴾

(२३) यह इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाना चाहते हैं।

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾

(२४) अब तू फ़िरऔन की ओर जा, उसने बड़ा विद्रोह मचा रखा है।[2]

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾

(२५) (मूसा ने) कहा कि हे मेरे प्रभु ! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾

(२६) तथा मेरे काम को मुझ पर सरल कर दे।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّن لِّسَانِي ﴿٢٧﴾

(२७) तथा मेरी जीभ की गाँठ खोल दे।

يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾

(२८) ताकि लोग मेरी बात भली-भाँति समझ सकें।

وَاجْعَل لِّي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾

(२९) तथा मेरा मंत्री मेरे परिवार में से बना दे।

---

[1]बिना दोष तथा रोग के का अर्थ यह है कि हाथ का इस प्रकार श्वेत एवं चमकदार होकर निकलना, किसी रोग के कारण नहीं है जैसाकि कुष्ठ के रोगी की खाल सफ़ेद हो जाती है। बल्कि यह दूसरा चमत्कार है, जो हम तुझे प्रदान कर रहे हैं। जिस प्रकार अन्य स्थान पर है।

﴿ فَذَانِكَ بُرْهَانَانِ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ﴾

"तो यह दो निशानियाँ हैं तेरे प्रभु की ओर से, फ़िरऔन तथा उसके प्रमुखों के लिए।" (सूरः *क़सस*-३२)

[2]फ़िरऔन की चर्चा इसलिए की कि उसने आदरणीय मूसा के समुदाय इस्राईल की सन्तान को दास बना रखा था तथा उस पर नाना प्रकार के अत्याचार करता था। इसके अतिरिक्त उसकी क्रूरता एवं अत्याचार अत्यधिक बढ़ गया था। यहाँ तक कि वह दावा करने लगा था ﴿ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴾ "मैं तुम्हारा उच्चतम प्रभु हूँ।"

(३०) (अर्थात) मेरे भाई हारून को। هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾

(३१) तू उससे मेरी कमर कस दे। اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾

(३२) तथा उसको मेरा सहायक नियुक्त कर दे।[1] وَاَشْرِكْهُ فِيْۤ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾

(३३) ताकि हम दोनों अत्यधिक तेरी प्रशंसा का वर्णन करें। كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾

(३४) तथा अत्यधिक तेरी याद करें।[2] وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾

(३५) नि:संदेह तू हमें भली प्रकार से देखने- اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾

---

[1]कहते हैं कि मूसा का जब फ़िरऔन के राजभवन में पालन हो रहा था, तो खजूर अथवा मोतियों के बजाय आग का अंगारा मुख में रख लिया था, जिससे उनकी जीभ जल गयी थी तथा उसमें कुछ तुतलापन हो गया था। (इब्ने कसीर) जब अल्लाह तआला का आदेश हुआ कि फ़िरऔन के पास जाकर मेरा संदेश पहुँचाओ, तो आदरणीय मूसा के दिल में दो बातें आयीं, एक तो यह कि वह बड़ा उग्र एवं घमण्डी राजा है, बल्कि प्रभु होने का दावा करता है। दूसरे यह कि मूसा के हाथों उसके समुदाय के एक आदमी की हत्या हो गयी थी जिसके कारण मूसा अलैहिस्सलाम को अपने प्राण रक्षा के लिए वहाँ से भागना पड़ा था। अर्थात एक तो फ़िरऔन के बड़ाई तथा बलवंत होने का भय तथा दूसरे अपने हाथों होने वाली घटना का भय तथा तीसरी अन्य बात अपनी जीभ में तुतलापन की। आदरणीय मूसा ने प्रार्थना की कि हे अल्लाह ! मेरा हृदय खोल दे ताकि मैं रिसालत का बोझ उठा सकूँ, मेरे कार्य को सरल बना दे अर्थात जो कार्य मुझे दिया गया है उसमें मेरी सहायता कर तथा मेरी जीभ की गाँठ खोल दे, जिससे मैं फ़िरऔन के समक्ष पूर्ण स्पष्टीकरण के साथ तेरा संदेश पहुँचा सकूँ। उसके साथ यह प्रार्थना भी की कि मेरे भाई हारून को (कहते हैं आयु में मूसा से बड़े थे) सहायक के रूप में मेरा मंत्री तथा सहयोगी बना दे। وزير शब्द موازر के अर्थों में है अर्थात बोझ उठाने वाला। जिस प्रकार एक मंत्री राजा का प्रभारी होता है तथा राज्य के संचालन में उसका सलाहकार होता है उसी प्रकार हारून मेरा सलाहकार एवं साथी हो।

[2]यह प्रार्थनाओं का कारण बताया कि इस प्रकार हम संदेश पहुँचाने के साथ-साथ तेरी पवित्रता एवं तेरा सुमिरन भी अधिक कर सकें।

भालने वाला है ।[1]

(३६) (अल्लाह तआला ने) कहा हे मूसा ! तेरे सभी प्रश्न पूरे कर दिये गये ।[2]

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَٰمُوسَىٰ ۝٣٦

(३७) हमने तो तुझ पर एक बार और भी इससे भी बड़ा उपकार किया है ।[3]

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰٓ ۝٣٧

(३८) जबकि हमने तेरी माता की अन्तरात्मा में वह उतारा, जिसका वर्णन अब किया जा रहा है ।

إِذْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰٓ ۝٣٨

(३९) कि तू इसे संदूक में बंद करके नदी में छोड़ दे, फिर नदी इसको तट पर ले जायेगी तथा मेरा एवं स्वयं उसका शत्रु उसे ले लेगा ।[4]

أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ

---

[1]अर्थात तुझे हर बात का ज्ञान है तथा बाल्यकाल में जिस प्रकार तूने हम पर उपकार किया, अब भी अपने उपकार से हमें वंचित न कर ।

[2]इससे ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने उनकी जीभ के तुतलेपन को भी समाप्त कर दिया होगा । इसलिए यह कहना उचित नहीं होगा कि मूसा ने पूरा तुतलापन दूर करने के लिए प्रार्थना नहीं की थी, इसलिए कुछ शेष रह गयी थी । शेष रहा फ़िरऔन का यह कहना ।

﴿وَلَا يَكَادُ يُبِينُ﴾

"यह तो स्पष्ट बोल भी नहीं सकता ।" (सूर: *अल-ज़ुख़रूफ़-५२*)

यह उनके अवहेलना तथा भूत की अवस्था के आधार पर है । (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]प्रार्थना को स्वीकार करने की शुभसूचना के साथ, अधिक सांत्वना तथा साहस के लिए अल्लाह तआला बाल्यकाल के उस उपकार का वर्णन कर रहा है जब मूसा की माता ने हत्या के भय से अल्लाह के आदेश से (अर्थात दिव्य वाक्य) से उन्हें जब वह नवजात शिशु थे, संदूक में रख कर नदी में डाल दिया था ।

[4]तात्पर्य फ़िरऔन है जो अल्लाह का भी शत्रु तथा आदरणीय मूसा का भी शत्रु था । अर्थात लकड़ी का वह संदूक तैरता हुआ जब राजभवन के किनारे पहुँचा तो उसे बाहर निकाल

يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُۥ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِيٓ ﴿٣٩﴾

तथा मैंने अपनी ओर का विशेष प्रेम एवं स्वीकृति तुझ पर डाल दिया।[1] ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी आँखों के समक्ष किया जाये।[2]

إِذْ تَمْشِيٓ أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُۥ ۖ فَرَجَعْنَٰكَ إِلَىٰٓ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَٰكَ مِنَ ٱلْغَمِّ وَفَتَنَّٰكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ

(४०) (याद कर) जबकि तेरी बहन चल रही थी तथा कह रही थी कि यदि तुम कहो तो मैं उसे बता दूँ जो उसका संरक्षक बन सके,[3] इस प्रकार से हमने तुझे पुन: तेरी माता के पास पहुँचाया कि उसकी आँखें ठंडी रहे। तथा वह दुखी न हो, तथा तूने एक व्यक्ति की हत्या[4] कर दी थी, उस पर भी हमने तुझे

कर देखा गया तो उसमें एक निर्दोष बालक था, जिसे फ़िरऔन ने अपनी पत्नी की इच्छा पर पालन-पोषण के लिए राजभवन में रख लिया।

[1]अर्थात फ़िरऔन के हृदय में डाल दिया अथवा जन सामान्य के हृदय में तेरा प्रेम डाल दिया।

[2]अत: अल्लाह के सामर्थ्य तथा उसकी सुरक्षा एवं संरक्षण का कमाल तथा चमत्कार देखिये कि जिस बालक के कारण फ़िरऔन अनगिनत शिशुओं का वध करवा चुका है, ताकि वह बच्चा जीवित न रहे उसी बच्चे को अल्लाह तआला उसकी गोद में पालन करवा रहा है। तथा माता अपने बालक को दूध पिला रही है, परन्तु उसकी मज़दूरी भी उसी मूसा के शत्रु से प्राप्त कर रही है।

[3]यह उस समय हुआ, जब माता ने सन्दूक नदी में डाल दिया तो पुत्री से कहा कि, तनिक देखती रहना कि यह कहाँ किनारे लगता है तथा इसके साथ क्या मामला होता है ? जब अल्लाह की इच्छा से मूसा फ़िरऔन के भवन में पहुँच गये, नवजात शिशु थे, अत: दूध पिलाने वाली स्त्रियों तथा आयाओं को बुलाया गया। परन्तु मूसा किसी का दूध न पीते। मूसा की बहन शान्तपूर्वक सारा दृश्य देख रही थी, अन्त में उसने कहा मैं तुम्हें ऐसी स्त्री बताती हूँ, जो तुम्हारी यह कठिनाई दूर कर देगी, उन्होंने कहा ठीक है, अत: वह अपनी माता को, जो मूसा की भी माता थीं बुला लाई। जब माता ने पुत्र को छाती से लगाया, तो मूसा ने अल्लाह की इच्छा तथा उपाय के अनुसार गटगट दूध पीना प्रारम्भ कर दिया।

[4]यह एक दूसरे उपकार का वर्णन है, जब मूसा से अकस्मात एक फ़िरऔनी केवल घूँसा मारने से मर गया जिसका वर्णन *सूर: क़सस* में आयेगा।

فِيٓ أَهۡلِ مَدۡيَنَ ثُمَّ جِئۡتَ عَلَىٰ قَدَرٖ يَٰمُوسَىٰ ۝٤٠

चिन्ता से बचा लिया, अर्थात हमने तेरी भली-भाँति परीक्षण कर लिया ।[1] फिर तू कई वर्ष तक मदयन के लोगों में ठहरा रहा ।[2] फिर अल्लाह के लिखे हुए भाग्य के अनुसार[3] हे मूसा ! तू आया ।

وَٱصۡطَنَعۡتُكَ لِنَفۡسِي ۝٤١

(४१) तथा मैंने तुझे विशेषरूप से अपने लिए निर्वाचित कर लिया ।

ٱذۡهَبۡ أَنتَ وَأَخُوكَ بِـَٔايَٰتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكۡرِي ۝٤٢

(४२) अब तू अपने भाई सहित मेरी निशानियाँ साथ ले जा, सावधान ! मेरे सुमिरन में आलस्य न करना ।[4]

ٱذۡهَبَآ إِلَىٰ فِرۡعَوۡنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ۝٤٣

(४३) तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, उसने बड़ी धूर्तता की है ।

---

[1] فتـــون यह دخول तथा خروج के समरूप धातु है अर्थात ابتليناك ابتلاء अर्थात हमने तुझे भली-भाँति जाँचा अथवा यह बहुवचन है فتنة की । जैसे حجرة का حجور तथा بدرة का بدور बहुवचन है । अर्थात हमने तुझे कई बार अथवा निरन्तर परीक्षाओं में डाला अथवा कठिनाईयों से निकाला । जैसे जो वर्ष बच्चों की हत्या का था, तुझे पैदा किया, तेरी माता ने तुझे नदी की धाराओं को सौंप दिया, सभी आयाओं का दूध तुझ पर निषेध कर दिया, तूने फ़िरऔन की दाढ़ी पकड़ ली थी जिस पर उसने तेरी हत्या का संकल्प कर लिया था, तेरे हाथों किब्ती की हत्या हो गयी, आदि इन सभी परीक्षा की घड़ी में हम ही तेरी सहायता एवं सुरक्षा करते रहे ।

[2]अर्थात फ़िरऔनी की अकस्मात हत्या के पश्चात तू यहाँ से निकलकर मदयन चला गया तथा वहाँ कई वर्ष रहा ।

[3]अर्थात ऐसे समय पर तू आया, जो समय मैंने अपने निर्णय तथा भाग्य में तुझसे वार्ता तथा नबूअत प्रदान करने के लिए लिखा था । अथवा قدر से तात्पर्य आयु है अर्थात आयु की उस अवस्था में आया जो नबूअत के लिए उचित है अर्थात चालीस वर्ष की आयु में ।

[4]इसमें अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वालों के लिए बड़ी शिक्षा है कि उन्हें अधिकतर अल्लाह का सुमिरन करना चाहिए ।

(४४) उसे कोमलता से[1] समझाओ, शायद वह समझ ले अथवा डर जाये।

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾

(४५) दोनों ने कहा, हे हमारे प्रभु ! हमें भय है कि कहीं फ़िरऔन हम पर कोई अत्याचार न करे अथवा अपनी धूर्तता में बढ़ न जाये।

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾

(४६) उत्तर मिला कि तुम दोनों कदापि भय न करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ तथा सुनता-देखता रहूँगा।[2]

قَالَ لَا تَخَافَا ۖ إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾

(४७) तुम उसके पास जाकर कहो कि हम तेरे प्रभु के ईशदूत (पैग़म्बर) हैं, तू हमारे साथ इस्राईल की सन्तान को भेज दे। उनके दण्ड समाप्त कर। हम तो तेरे पास तेरे प्रभु की ओर से निशानियाँ लेकर आये हैं, शान्ति उसी के लिए है जो मार्गदर्शन को दृढ़ता[3] से अपनाये।

فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾

---

[1]यह योग्यता भी अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वालों के लिए अति आवश्यक है। क्योंकि कठोरता से लोग भागते हैं तथा सरलता एवं कोमलता से निकट आते तथा प्रभावित होते हैं यदि वे मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले होते हैं।

[2]तुम फ़िरऔन से जाकर जो कहोगे तथा उसका उत्तर वह देगा, मैं वह सुनता तथा तुम्हारे तथा उसकी प्रतिक्रिया को देखता रहूँगा। उसके अनुसार मैं तुम्हारी सहायता तथा उसके षड़यन्त्रों को निष्फल करूँगा, इसलिए उसके पास जाओ, संकोच की कोई आवश्यकता नहीं।

[3]यह सलाम सम्मान के लिए नहीं, बल्कि शान्ति तथा सुरक्षा की ओर आमन्त्रण है। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोम के राजा हरकूलस के नाम पत्र लिखा था। «أَسْلِمْ تَسْلَمْ». (इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले, सुरक्षा में रहेगा) इसी प्रकार पत्र के प्रारम्भ में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ﴿وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ﴾ भी लिखा (इब्ने कसीर) इसका अर्थ यह है कि किसी ग़ैर मुस्लिम को पत्र अथवा सभा में सम्बोधित करना हो तो उसे इन्हीं शब्दों में सलाम किया जाये जो अनुबन्धित है मार्गदर्शन के अपनाने के साथ।

(४८) हमारी ओर प्रकाशना (वह्यी) की गयी है कि जो झुठलाये तथा मुख फेरे उसके लिए यातनायें हैं।

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾

(४९) (फ़िरऔन ने) पूछा कि हे मूसा ! तुम दोनों का प्रभु कौन है।

قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٤٩﴾

(५०) उत्तर दिया कि हमारा प्रभु वह है, जिसने प्रत्येक को उसका विशेष रूप प्रदान किया, फिर मार्गदर्शन भी दिया।[1]

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾

(५१) उसने कहा (अच्छा यह तो बताओ) पूर्वकाल के लोगों की क्या दशा होनी है ?[2]

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾

(५२) उत्तर दिया कि उनका ज्ञान मेरे प्रभु के पास किताब में (उपस्थिति) है, न तो मेरा प्रभु त्रुटि करता है न भूलता है।[3]

قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى ﴿٥٢﴾

---

[1]जैसे जो रूप रेखा मनुष्य के लिए उचित थी, वह उसे, जो पशुओं के योग्य थी वह पशुओं को प्रदान किया। मार्ग दिखाया का अर्थ प्रत्येक जीवधारी को उसकी प्राकृतिक आवश्यकताओं के अनुसार रहन-सहन खाने-पीने तथा आवास-निवास की विधि समझा दी, उसी के अनुसार प्रत्येक जीवधारी अपनी जीवन सामग्री एकत्रित करता है तथा जीवन के ये दिन व्यतीत करता है।

[2]फ़िरऔन ने बात की दिशा बदलने के लिए यह प्रश्न किया, अर्थात पूर्वकाल में जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों की पूजा करते दुनिया से चले गये, उनका परिणाम क्या होगा ?

[3]आदरणीय मूसा ने उत्तर दिया, उनका ज्ञान न तुझे है तथा न मुझे। परन्तु उनका ज्ञान मेरे प्रभु को है जो उसके पास किताब में विद्यमान है। वह उसके अनुसार उन्हें बदला तथा दण्ड देगा, फिर उसका ज्ञान इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु को अपनी ज्ञान की परिधि में लिए हुए है कि उसकी दृष्टि से कोई छोटी बड़ी वस्तु ओझल नहीं हो सकती, न उसे कोई बात भूलती है। जबकि जीवधारियों के अन्दर दोनों बातों का समावेश है। एक तो उनका

(५३) उसी ने तुम्हारे लिए धरती को बिस्तर बनाया है तथा उसमें तुम्हारे चलने के लिए मार्ग बनाये हैं तथा आकाश से वर्षा भी वही करता है, फिर उस वर्षा के कारण विभिन्न प्रकार की पैदावार भी हम ही पैदा करते हैं।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾

(५४) तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को भी चराओ ।[1] नि:संदेह इसमें बुद्धिमानों के लिए[2] बहुत-सी निशानियाँ हैं।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ﴿٥٤﴾

(५५) उसी धरती में से हमने तुम्हें पैदा किया तथा उसी में फिर वापस लौटायेंगे तथा उसी से पुन: तुम सबको[3] निकाल खड़ा करेंगे।

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ﴿٥٥﴾

ज्ञान सम्पूर्ण नहीं, बल्कि कम है। दूसरे ज्ञान होने के पश्चात वह भूल भी सकते हैं। मेरा प्रभु इन दोनों त्रुटियों से पवित्र है। आगे, प्रभु के अन्य गुणों का वर्णन हो रहा है।

[1]अर्थात इस विभिन्न प्रकार की पैदावार में कुछ वस्तुयें तुम्हारे भोजन, स्वाद तथा स्फूर्ति की सामग्री हैं तथा कुछ तुम्हारे चौपाये तथा पशुओं के लिए हैं।

[2] نـهى बहुवचन है نهية का, जिसका अर्थ बुद्धि है أولوا لنهى बुद्धिवाले, बुद्धि को نهية तथा बुद्धिमान को ذو نهيـة इसलिए कहा जाता है कि अन्त में उन्हीं की राय पर मामले का अन्त होता है अथवा इसलिए कि यह मन को बुराई से रोकते हैं। ينهون النفس عن القبائح (फ़तहुल क़दीर)

[3]कुछ कथनों के अनुसार गाड़ने के पश्चात तीन लप मिट्टी डालते समय इस आयत का पाठ करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रमाणित है। परन्तु प्रमाणानुसार यह कथन क्षीण है। परन्तु आयत बिना तीन उंजुली डालने वाला कथन जो इब्ने माजा में है, सही है, इसलिए गाड़ने के पश्चात दोनों हाथों की उंजुली से तीन-तीन बार मिट्टी डालने को धर्मगुरूओं ने उचित कहा है। देखिये किताबुल जनायेज़ पृष्ठ १५२ तथा इरवाउल गलील संख्या २५१ भाग ३ पृष्ठ २००

وَلَقَدْ أَرَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा हमने उसे अपनी सभी निशानियाँ दिखा दीं, परन्तु उसने फिर भी झुठलाया तथा अस्वीकार कर दिया।

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿٥٧﴾

(५७) कहने लगा हे मूसा ! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमें अपने जादू की शक्ति से हमारे देश से निकाल दे।[1]

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِۦ فَٱجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُۥ نَحْنُ وَلَآ أَنتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

(५८) ठीक है, हम भी तेरा सामना करने के लिए इसी जैसा जादू अवश्य लायेंगे। बस तू हमारे तथा अपने मध्य वायदा का समय निर्धारित कर ले[2] कि न हम उसके विरुद्ध करें तथा न तू। खुले मैदान[3] में मुकाबिला (प्रतियोगिता) हो।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ ٱلزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ ٱلنَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾

(५९) (मूसा ने) उत्तर दिया कि शोभा तथा समारोह के दिन[4] का वचन है तथा यह कि लोग दिन चढ़े ही एकत्रित हो जायें।

---

[1]जब फ़िरऔन को स्पष्ट प्रमाण के साथ चमत्कार भी दिखाये गये जो छड़ी तथा हाथ के सफ़ेद चमकदार होने के रूप में आदरणीय मूसा को प्रदान किये गये थे, तो फ़िरऔन ने उसे जादू का करतब समझा तथा कहने लगा, ठीक है, तू हमें इस जादू की शक्ति से हमारी धरती से निकालना चाहता है।

[2] موعد धातु है अथवा यदि समय तथा स्थान वाचक है तो काल तथा स्थान दोनों तात्पर्य हो सकते हैं कि कोई स्थान तथा दिन निर्धारित कर ले।

[3] مكانا سوى साफ़ समतल स्थान, जहाँ होने वाले मुकाबिले को सभी लोग सरलता से देख सकें अथवा ऐसा समतल स्थान जहाँ दोनों पक्ष सुविधापूर्वक पहुँच सकें।

[4]इससे तात्पर्य नौरोज़ अथवा कोई अन्य वार्षिक उत्सव अथवा मेले का दिन है, जिसे वे ईद के रूप में मनाते थे।

(६०) फिर फ़िरऔन लौट गया तथा उसने अपने हथकंडे एकत्रित किये, फिर आ गया।[1]

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ۝٦٠

(६१) मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हारा विनाश हो, अल्लाह (तआला) पर झूठ तथा आरोप न लगाओ कि वह तुम्हें यातनाओं से नाश कर दे। याद रखो ! वह कभी सफल न होगा जिसने झूठी बात गढ़ी।[2]

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ۝٦١

(६२) फिर ये लोग आपस में विचार-विमर्श में विभिन्न मत हो गये तथा छुपकर गुप्त मंत्रणा करने लगे।[3]

فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ۝٦٢

(६३) कहने लगे ये दोनों मात्र जादूगर हैं तथा इनका दृढ़ संकल्प है कि अपने जादू की शक्ति से तुम्हें तुम्हारे देश से निष्कासित कर दें तथा तुम्हारे सर्वोच्च धर्म को नाश कर दें।[4]

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ۝٦٣

---

[1]अर्थात विभिन्न नगरों से दक्ष जादूगरों को एकत्रित करके सभा-स्थल में आ गया।

[2]जब फ़िरऔन सभा-स्थल पर जादूगरों को मुक़ाबिले के लिए उत्साहित कर रहा था तथा उपहार तथा अपनी विशेष निकटता प्रदान करने की बात कर रहा था, तो आदरणीय मूसा ने भी मुक़ाबिले के पूर्व उन्हें सम्बोधित किया तथा उनके वर्तमान व्यवहार पर उन्हें अल्लाह के प्रकोप से डराया।

[3]आदरणीय मूसा के सम्बोधन से उनमें आपस में कुछ मतभेद हुआ तथा कुछ लोग चुपके-चुपके कहने लगे कि यह वास्तव में अल्लाह का नबी न हो ? उसकी वार्ता जादूगरों वाली नहीं पैग़म्बरों जैसी लगती है। कुछ ने इसके विपरीत विचार व्यक्त किया।

[4] مثلى विशेषण है طريقة का। यह أمثل का स्त्रीलिंग है, श्रेष्ठ के अर्थ में है। अर्थ यह कि यदि यह दोनों भाई अपने "जादू" की शक्ति से प्रभावशाली हो गये, तो सरदार, मुखिया, धनवान एवं सम्मानित व्यक्ति उसकी ओर आकर्षित हो जायेंगे जिससे हमारा राज्य ख़तरे में है तथा उनके राज का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा। इसके अतिरिक्त हमारा अति उत्तम मार्ग अथवा धर्म, उसे भी समाप्त कर देंगे। अर्थात अपने मूर्तिपूजक धर्म को 'अति उत्तम'

فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾

(६४) तो तुम भी अपना कोई दाँव उठा न रखो, फिर पंक्तिबद्ध होकर आ जाओ। जो आज विजय हो गया वही सफलता ले गया।

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَن تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ﴿٦٥﴾

(६५) वे कहने लगे कि हे मूसा! या तो तू पहले डाल अथवा हम पहले डालने वाले बन जायें।

قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾

(६६) उत्तर दिया, नहीं तुम ही पहले डालो,[1] अब तो मूसा को यह भ्रम होने लगा कि उन की रस्सियाँ तथा लकड़ियाँ उनके जादू की शक्ति से दौड़ भाग रही हैं।[2]

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ﴿٦٧﴾

(६७) इससे मूसा अपने मन ही मन में डरने लगे।

बना दिया। जैसाकि आज भी झूठे धर्म तथा गुटों के अनुयायी इसी निराधार भ्रम में पड़े हैं। सत्य कहा अल्लाह तआला ने।

﴿ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴾

"प्रत्येक गुट जो उसके पास है, उस पर रीझ रहा है।" (सूर: *अल-रूम*-३२)

[1]आदरणीय मूसा ने प्रथम उनको अपना खेल दिखाने को कहा ताकि उन पर यह स्पष्ट हो जाये कि वह जादूगरों की इतनी बड़ी संख्या से, जो फ़िरऔन एकत्रित करके लाया है, तथा उसी प्रकार उनके जादू के खेल से कदापि भयभीत नहीं हैं। दूसरे उनके जादू के खेल-तमाशे, जब अल्लाह के चमत्कार से पलक झपकते समाप्त एवं निरस्त हो जायेंगे तो इसका अति उत्तम प्रभाव पड़ेगा तथा जादूगर यह विचार करने पर बाध्य हो जायेंगे कि यह जादू नहीं है, वास्तव में इसको अल्लाह का पक्ष प्राप्त है कि एक क्षण में इसकी एक लाठी हमारे सारे खेल तमाशे निगल गयी।

[2]कुरआन के इन शब्दों से ज्ञात होता है कि रस्सियाँ तथा लाठियाँ वास्तव में सर्प नहीं बनी थीं, बल्कि जादू की शक्ति से ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे नज़रबन्द कर दी जाती है। इसका प्रभाव यह होता है कि अस्थाई तथा क्षणिक रूप से देखने वालों पर भय आच्छादित हो जाता है, यद्यपि वस्तु की वास्तविकता परिवर्तित न हो। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि जादू चाहे कितना बड़ा हो, वह वस्तु की वास्तविकता नहीं बदल सकता।

(६८) हमने कहा कि कुछ भय न कर, नि:संदेह तू ही प्रभावशाली तथा सम्मानित होगा ।[1]

قُلۡنَا لَا تَخَفۡ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡأَعۡلَىٰ ﴿٦٨﴾

(६९) तथा तेरे दाहिने हाथ में जो है उसे डाल दे कि उनकी सारी कारीगरी को यह निगल जाये, उन्होंने जो कुछ बनाया है, यह केवल जादूगरों के करतब हैं तथा जादूगर कहीं से भी आये सफल नहीं होता ।

وَأَلۡقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلۡقَفۡ مَا صَنَعُوٓاْۖ إِنَّمَا صَنَعُواْ كَيۡدُ سَٰحِرٖۖ وَلَا يُفۡلِحُ ٱلسَّاحِرُ حَيۡثُ أَتَىٰ ﴿٦٩﴾

---

[1]इस भयंकर दृश्य को देखकर यदि आदरणीय मूसा ने भय का आभास किया तो यह एक स्वाभाविक बात थी, जो न तो नबूअत के विरूद्ध है न शुद्धता के । क्योंकि नबी भी मनुष्य होता है तथा मानवी स्वाभाविक माँगों से न तो उच्च होता है न हो सकता है । इससे ज्ञात होता है कि जिस प्रकार नबियों को अन्य मानवीय कठिनाईयाँ होती हैं अथवा हो सकती हैं, इसी प्रकार वह जादू से भी प्रभावित हो सकते हैं जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यहूदियों ने जादू किया था जिसके प्रभाव का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम संवेदन करते थे, इससे भी नबूअत के पद पर कोई दोष नहीं आता क्योंकि इससे नबूअत के कार्य प्रभावित नहीं होते, अल्लाह तअला नबी की सुरक्षा करता है तथा जादू से प्रकाशना अथवा रिसालत के कर्त्तव्यों को प्रभावित होने नहीं देता । तथा सम्भव है कि यह भय इसलिए हुआ हो कि मेरी लाठी डालने से पूर्व ही लोग उनके जादू के खेल तथा तमाशों को देखकर प्रभावित न हो जायें, परन्तु संभाव्य बात यह है कि यह भय इसलिए हुआ कि इन जादूगरों ने भी जो खेल तमाशे दिखाये वह लाठियों के द्वारा ही दिखाया, जबकि मूसा के पास भी लाठी थी, जिसे उन्हें धरती पर फेंकना था, मूसा के दिल में विचार आया कि देखने वाले इससे शंका तथा संदेह में न पड़ जायें तथा वे यह न समझ लें कि दोनों ने एक ही प्रकार से जादू प्रस्तुत किया, इसलिए यह निर्णय कैसे किया जाये कि कौन सा जादू है तथा कौन-सा चमत्कार ? कौन विजयी है तथा कौन पराजित ? अर्थात जादू तथा चमत्कार का जो अन्तर बताने का उद्देश्य है, वह वर्णित शंका के कारण प्राप्त न हो सकेगा, इसलिए यह ज्ञात हुआ कि नबियों को कभी-कभी यह भी ज्ञात नहीं होता कि उनके हाथ से कौन-सा चमत्कार घटित होने वाला है । स्वयं चमत्कार दिखाने का सामर्थ्य तो दूर की बात है । यह तो मात्र अल्लाह का कार्य है कि वह नबियों के हाथ से चमत्कार दिखाये, इस प्रकार मूसा अलैहिस्सलाम की इस शंका तथा भय को दूर करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मूसा किसी भी प्रकार से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, तू ही विजयी रहेगा, इस वाक्य से स्वाभाविक भय तथा अन्य शंकाओं, सभी को समाप्त कर दिया । अत: ऐसा ही हुआ, जैसाकि अगली आयत में है ।

(७०) अब तो सारे जादूगर दण्डवत (सजदा) हो गये तथा पुकार उठे कि हम तो हारून तथा मूसा के प्रभु पर ईमान लाये।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ۝

(७१) (फ़िरऔन) कहने लगा कि क्या मेरी आज्ञा के पूर्व ही तुम उस पर ईमान ले आये? नि:संदेह यही तुम्हारा वह बड़ा (गुरू) है जिसने तुम सबको जादू सिखाया है, (सुन लो) मैं तुम्हारे हाथ-पाँव उल्टे सीधे[1] कटवाकर तुम सबको खजूर के तनों में फाँसी पर लटकवा दूँगा तथा तुम्हें पूर्णरूप से ज्ञात हो जायेगा कि हम में से किस की मार अधिक कठोर तथा स्थाई है।

قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ۝

(७२) (उन्होंने) उत्तर दिया कि असम्भव है कि हम तुम्हें प्रधानता दें उन तर्कों पर जो हमारे समक्ष आ चुके तथा उस अल्लाह पर जिसने हमें पैदा किया,[2] अब तो तू जो कुछ करना चाहे, कर ले, तू जो कुछ आदेश चला सकता है वह इसी सांसारिक जीवन[3] में ही है।

قَالُوا لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

---

[1] من خلاف (उल्टे-सीधे) का अर्थ है कि दहिना हाथ तो बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ तो दाहिना पैर।

[2] यह अनुवाद उस स्थिति में है जब والذي فطرنا का सम्बन्ध ماجاء نا से हो। तथा यह भी उचित है। परन्तु कुछ व्याख्याकारों ने इसे शपथ बताया है। अर्थात सौगन्ध है उस शक्ति की जिसने हमें पैदा किया, तुझे इन तर्कों पर प्रधानता न देंगे, जो हमारे समक्ष आ चुके।

[3] अर्थात तेरे वश में जो कुछ है, कर ले, हम जानते हैं कि तेरा वश मात्र इस दुनिया तक चल सकता है, जबकि हम जिस प्रभु पर ईमान लाये हैं, उसका राज्य तो लोक-परलोक दोनों स्थानों पर है। मरने के बाद तो हम तेरे अत्याचार तथा क्रूरता से तो बच जायेंगे

(७३) हम (इस आशा से) अपने प्रभु पर ईमान लाये कि वह हमारी त्रुटियाँ क्षमा कर दे तथा (विशेषकर) जादूगरी (का पाप) जो कुछ तूने हम से बाध्य करके कराया [1] है, अल्लाह ही सर्वश्रेष्ठ तथा अनन्त है ।[2]

إِنَّآ ءَامَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَٰيَٰنَا وَمَآ أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ ٱلسِّحْرِ ۗ وَٱللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ ﴿٧٣﴾

(७४) बात यही है कि जो भी पापी बनकर अल्लाह (तआला) के यहाँ जायेगा, उसके लिए नरक है, जहाँ न मृत्यु होगी तथा न जीवन ।[3]

إِنَّهُۥ مَن يَأْتِ رَبَّهُۥ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُۥ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾

क्योंकि शरीर से प्राण निकल जाने के पश्चात तेरा वश समाप्त हो जायेगा परन्तु यदि हम अपने प्रभु के अवज्ञाकारी रहे, तो मरने के पश्चात भी प्रभु के वश से नहीं निकल सकते, वह हमें घोर यातना देने का सामर्थ्य रखता है। प्रभु पर ईमान लाने के पश्चात एक ईमान लाने वाले के जीवन में जो महान परिवर्तन आना, दुनिया से अलगाव तथा आख़िरत के स्थाई जीवन पर जिस प्रकार विश्वास होना चाहिए तथा फिर इस विश्वास एवं ईमान पर जो दुख आयें, उन्हें जिस साहस तथा धैर्य एवं दृढ़ता से सहन करना चाहिए जादूगरों ने उसका एक उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया कि ईमान लाने के पूर्व वे किस प्रकार फ़िरऔन से उपहार तथा साँसारिक पद तथा मर्यादा के आकाँक्षी थे, परन्तु ईमान लाने के पश्चात उन्हें कोई प्रलोभन तथा लालच विचलित नहीं कर पायी, न दण्ड तथा यातना की धमकियाँ उन्हें ईमान से मुख मोड़ने में सफल हो सकीं।

[1]दूसरा अनुवाद इसका यह है कि "हमारी वह त्रुटियाँ भी क्षमा कर दे जो मूसा के मुक़ाबिले में तेरे बाध्य करने पर हमने जादू के रूप में की ।" इस अवस्था मे ما أكرهتنا का सम्बन्ध خطايانا से होगा।

[2]ये फ़िरऔन के शब्द " ﴿وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَآ أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ﴾ " का उत्तर है कि हे फ़िरऔन ! तू जो हमें कड़ी यातना की धमकी दे रहा है, अल्लाह तआला के दरबार में जो प्रतिफल तथा प्रत्युपकार मिलेगा, वह इससे कहीं अत्यधिक श्रेष्ठ तथा स्थाई है।

[3]अर्थात यातना से तंग आकर मृत्यु की कामना करेंगे, परन्तु मृत्यु नहीं आयेगी तथा रात-दिन यातना में घिरे रहना, खाने-पीने के लिए ज़क़्क़ूम जैसे कड़ुवे स्वाद वाला वृक्ष तथा नरक वालों के शरीर से निकले हुए रक्त एवं मवाद मिलना, यह कोई जीवन होगा ? اللهم أجرنا من عذاب جهنم (हे अल्लाह हमें नरक की यातना से बचा)

(७५) तथा जो भी उसके पास ईमान वाला होकर आयेगा तथा उसने सदाचार भी किये होंगे उसके लिए उच्च तथा उत्तम पद (श्रेणियाँ) हैं।

وَمَنْ يَّأْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾

(७६) स्थाई स्वर्ग जिनके नीचे नदियाँ बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। यही पारितोषिक है प्रत्येक उस व्यक्ति का जो पवित्र है।[1]

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾

(७७) तथा हमने मूसा की ओर प्रकाशना (वह्यी) उतारी कि तू रातों-रात मेरे भक्तों को ले चल[2] तथा उनके लिए समुद्र में सूखा मार्ग बना ले,[3] फिर न तुझे किसी के आ पकड़ने का भय होगा न डर।[4]

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾

---

[1]नरकवासियों के विपरीत ईमानवालों को स्वर्ग का सुखद जीवन मिलेगा, इसका वर्णन किया तथा स्पष्ट कर दिया कि इसके पात्र वे लोग होंगे, जो ईमान लाने के पश्चात उसकी माँग को भी पूरा करेंगे अर्थात पुण्य का कार्य करेंगे तथा अपने आपको पाप के प्रदूषण से पवित्र रखेंगे। इसलिए कि ईमान मुख से कुछ शब्द कह देने का नाम नहीं है अपितु विश्वास तथा कर्म के योग का नाम है।

[2]जब फ़िरऔन ईमान भी नहीं लाया तथा इस्राईल की सन्तान को स्वतन्त्र करने को भी तैयार नहीं हुआ, तो अल्लाह तआला ने मूसा को यह आदेश दिया।

[3]इसका विस्तृत वर्णन *सूर: अल शुअरा* में आयेगा कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के आदेश से समुद्र में लाठी मारी, जिससे समुद्र में गुज़रने के लिए सूखा मार्ग बन गया।

[4]ख़तरा फ़िरऔन तथा उसकी सेना का तथा [illegible] पानी में डूबने का।

(७८) फ़िरऔन ने अपनी सेना सहित उनका पीछा किया, फिर तो समुद्र उन सब पर छा गया जैसा कुछ छा जाने वाला था ।[1]

فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُم مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

(७९) तथा फ़िरऔन ने अपने समुदाय को भटकावे में डाल दिया तथा सीधा मार्ग न दिखाया ।[2]

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ ﴿٧٩﴾

(८०) हे इस्राईल के पुत्रो ! (देखो) हमने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से मुक्त कर दिया तथा तुम को तूर पर्वत के दाहिने ओर का वचन[3] दिया तथा तुम पर 'मन्न' तथा 'सलवा' उतारा ।[4]

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَاعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ﴿٨٠﴾

(८१) तुम हमारी प्रदान की हुई पवित्र जीविकायें खाओ, तथा उसमें सीमा का उल्लंघन न

كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ

---

[1]अर्थात उस सूखे मार्ग पर जब फ़िरऔन तथा उसकी सेना चलने लगी, तो अल्लाह तआला ने समुद्र को आदेश दिया कि पूर्ववत स्थिति में आ जा, अत: वह सूखा मार्ग पलक झपकते ही पानी की धाराओं में परिवर्तित हो गया तथा फ़िरऔन सहित पूरी सेना डूब गई, غشيهم का अर्थ है علاهم و أصابهم समुद्र का पानी उन पर आच्छादित हो गया। ما غشيهم यह पुनरावृत्ति भयानकता के वर्णन के लिए है, अथवा इसके अर्थ है, "जो प्रसिद्ध तथा परिचित है ।"

[2]इसलिए कि समुद्र में जलमग्न होना उनका दुर्भाग्य था।

[3] و واعدناكم में सर्वनाम बहुवचन में होकर सम्बोधित है, इसका अर्थ यह है कि मूसा तूर नामक पर्वत पर तुम्हें अर्थात तुम्हारे प्रतिनिधि भी साथ लेकर आयें ताकि तुम्हारे समक्ष हम मूसा से वार्ता करें अथवा सर्वनाम बहुवचन इसलिए लाया गया कि मूसा को तूर नामक पर्वत पर बुलाना इस्राईल की सन्तान ही के लिए तथा उन्हें मार्गदर्शन तथा प्रकाश प्रदान करने के लिए था।

[4]'मन्न' तथा 'सलवा' के उतरने का वर्णन सूर: अल-बकर: के प्रारम्भ में गुजर चुका है। 'मन्न' कोई स्वादिष्ट मीठी वस्तु थी जो आकाश से अवतरित होती थी तथा 'सलवा' से तात्पर्य बटेर पक्षी है जो अधिक संख्या में उनके पास आते थे और वे आवश्यकता अनुसार उन्हें पकड़ कर पकाते तथा खा लेते।

وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ﴿٨١﴾

करो ।[1] अन्यथा तुम पर मेरा प्रकोप उतरेगा, तथा जिस पर मेरा प्रकोप उतर जायेगा, वह नि:संदेह नाश हुआ ।[2]

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा नि:संदेह मैं उन्हें क्षमा कर देने वाला हूँ, जो क्षमा माँगें, ईमान लायें, पुण्य के कार्य करें तथा उचित मार्ग पर भी रहें ।[3]

وَمَا أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٨٣﴾

(८३) तथा हे मूसा ! तुझे अपने समुदाय से (निश्चिन्त करके) कौन-सी बात शीघ्र ले आयी ?

قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾

(८४) कहा वह लोग भी मेरे पीछे ही पीछे हैं, तथा मैंने हे प्रभु तेरी ओर शीघ्रता इसलिए की कि तू प्रसन्न हो जाये ।[4]

---

[1] طغيان का अर्थ है 'उल्लंघन करना' । अर्थात उचित तथा हलाल वस्तुओं को छोड़कर हराम तथा निषेध वस्तुओं की ओर उल्लंघन मत करो । अथवा अल्लाह के उपकारों का इंकार करके अथवा उस पर अविश्वास करके अथवा कृतघ्नता करके सीमा का उल्लंघन न करो, इन सभी भावार्थों पर طغيان का शब्द चरितार्थ होता है तथा कुछ विद्वानों का कहना है कि طغيان का भावार्थ आवश्यकता से अधिक पक्षी पकड़ना अर्थात आवश्यकतानुसार पक्षी पकड़ो तथा उस में अति न करो ।

[2]दूसरा अर्थ यह वर्णन किया गया है कि वह हाविया अर्थात नरक में गिरा । हाविया नरक का निचला भाग है अर्थात नरक के निचले भाग का अधिकारी हो गया ।

[3]अर्थात अल्लाह की क्षमा का अधिकारी होने के लिए चार बातें आवश्यक हैं । अविश्वास तथा विमुखता से पश्चाताप, ईमान, पुण्य का कार्य एवं सत्यमार्ग पर चलते रहना अर्थात सीधे मार्ग पर चलते हुए उसे मृत्यु आये, अन्यथा स्पष्ट बात है कि क्षमा माँगने तथा ईमान के पश्चात यदि उसने फिर शिर्क तथा कुफ़्र का मार्ग अपनाया, यहाँ तक कि उसकी मृत्यु हो गयी तथा वह अनिष्ठा तथा मिश्रणवाद ही पर रहा, तो अल्लाह की क्षमा के बजाय यातना का अधिकारी होगा ।

[4]समुद्र पार करने के पश्चात मूसा अलैहिस्सलाम इस्राईल के सम्मानित व्यक्तियों को अपने साथ लेकर तूर पर्वत की ओर चले, परन्तु प्रभु से मिलन की उत्सुकता में साथियों को पीछे छोड़कर तूर पर्वत पर अकेले ही पहुँच गये । प्रश्न करने पर उत्तर दिया, मुझे

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾

(८५) कहा हमने तेरे समुदाय को तेरे पीछे परीक्षण में डाल दिया तथा उन्हें 'सामरी' ने भटका (कुमार्ग कर) दिया ।[1]

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَوْعِدِي ﴿٨٦﴾

(८६) तो मूसा अत्यधिक क्रोधित तथा शोकग्रस्त होकर वापस लौटे, तथा कहने लगे कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! क्या तुम से तुम्हारे प्रभु ने अच्छा वादा नहीं किया था ?[2] क्या उसकी अवधि तुम्हें लम्बी प्रतीत हुई ?[3] अथवा तुम्हारा विचार ही यह है कि तुम पर तुम्हारे प्रभु का प्रकोप उतरे । अतः तुमने मेरे वचन को भंग किया ।[4]

तो तेरी प्रसन्नता की चाह तथा उसकी शीघ्रता थी । वे लोग तो मेरे पीछे-पीछे ही आ रहे हैं । कुछ विद्वानों के निकट इसका अर्थ यह नहीं कि मेरे पीछे आ रहे हैं, बल्कि यह है कि वे मेरे पीछे तूर पर्वत के निकट ही हैं तथा वहाँ मेरी वापसी की प्रतीक्षा में है ।

[1]आदरणीय मूसा के पश्चात 'सामरी' नामक व्यक्ति ने इस्राईल की सन्तान को बछड़ा पूजने पर लगा दिया जिसकी सूचना अल्लाह तआला ने तूर पर ही मूसा को दी कि 'सामरी' ने तेरे अनुयायियों को भटका दिया । परीक्षा में डालने को अल्लाह ने अपने से सम्बन्धित किया है इसलिए की उत्पत्तिकार वही है अन्यथा भटकाने का कारण तो 'सामरी' ही था जैसाकि أضلهم السامري से स्पष्ट है ।

[2]इससे तात्पर्य स्वर्ग अथवा विजय का वचन है यदि वे धर्म पर स्थित रहे अथवा तौरात प्रदान करने का वचन है, जिसके लिए उन्हें तूर पर्वत पर बुलाया गया था ।

[3]क्या उस प्रतिज्ञा की अवधि बहुत दीर्घ हो चुकी थी कि तुम भूल गये तथा बछड़े की पूजा प्रारम्भ कर दी ।

[4]समुदाय ने मूसा से प्रतिज्ञा की थी कि उनके तूर पर्वत से वापसी तक वे अल्लाह की इबादत तथा आज्ञा पालन पर स्थिर रहेंगे अथवा यह प्रतिज्ञा थी कि हम भी तूर पर्वत पर आप के पीछे-पीछे आ रहे हैं । परन्तु मार्ग में ही रूक कर उन्होंने बछड़े की पूजा प्रारम्भ कर दी ।

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾

(८७) (उन्होंने) उत्तर दिया कि हमने अपने अधिकार से आपके साथ वचन भंग नहीं किया[1] अपितु हम पर जो आभूषण समुदाय के लाद दिये गये थे, उन्हें हमने डाल दिया, तथा उसी प्रकार 'सामरी' ने भी डाल दिये ।

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ فَقَالُوا هَٰذَا إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

(८८) फिर उसने लोगों के लिए एक बछड़ा निकाला अर्थात बछड़े की मूर्ति जिसकी गाय जैसी आवाज़ थी, फिर कहने लगे कि यही तुम्हारा भी पूज्य है,[2] तथा मूसा का भी, परन्तु मूसा भूल गया है ।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

(८९) क्या ये भटके हुए लोग यह भी नहीं देखते कि वह तो उनकी बात का उत्तर भी नहीं दे सकता तथा न उनके किसी बुरे-भले का अधिकार रखता है ?[3]

---

[1]अर्थात हमने अधिकार से यह कार्य नहीं किया बल्कि यह दोष हम से विवशता में हो गया । आगे इसका कारण वर्णन किया ।

[2] زينة से आभूषण तथा القوم से फ़िरऔन के अनुयायी तात्पर्य हैं । कहते हैं कि यह आभूषण उन्होंने फ़िरऔनियों से उधार लिये थे इसीलिए उन्हें وزر- أوزار(बोझ) का बहुवचन कहा गया है, क्योंकि ये उनके लिये उचित नहीं थे, अतः उन्हें एकत्रित करके एक गडढ़े में डाल दिया गया, 'सामरी' ने भी (जो मुसलमानों में कुछ भटके हुए गुटों की तरह) भटका हुआ था, कुछ डाला (यह वह मिट्टी थी जिसका स्पष्टीकरण आगे है) फिर उसने सभी आभूषणों को भस्म करके एक प्रकार का बछड़ा बनाया कि जिसमें हवा अन्दर बाहर आने-जाने से एक प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती थी । इस ध्वनि से उसने इस्राईल की सन्तान को भटकाया कि मूसा तो भटक गये हैं कि वह अल्लाह से मिलने के लिए तूर पर्वत पर गये हैं, जबकि तुम्हारा तथा मूसा का पूज्य यह है ।

[3]अल्लाह तआला ने उनकी मूर्खता तथा कुबुद्धि का स्पष्टीकरण करते हुए फ़रमाया कि इन बुद्धि के अंधों को इतना भी पता नहीं चला कि यह बछड़ा कोई उत्तर दे सकता है, न लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है । जबकि देवता तो वही हो सकता है जो

(९०) तथा हारून ने इससे पूर्व ही उनसे कह दिया था कि हे मेरी समुदाय के लोगो ! इस बछड़े से तो तुम्हारा परीक्षण किया गया है, तुम्हारा वास्तविक प्रभु तो अल्लाह दयालु ही है तो तुम सब मेरा अनुकरण करो तथा मेरी बात मानते चले जाओ ।[1]

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾

(९१) (उन्होंने) उत्तर दिया कि मूसा के आने तक हम तो इसी के पुरोहित रहेंगे ।[2]

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾

(९२) (मूसा) कहने लगे हे हारून ! इन्हें भटकता देखते हुए तुम्हें किस बात ने रोक रखा था ?

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾

(९३) कि तू मेरे पीछे न आया, क्या तू भी मेरी आज्ञा का अवज्ञाकारी बन बैठा ।

اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾

(९४) (हारून ने) कहा हे मेरे माँ जाये भाई ! मेरी दाढ़ी न पकड़ तथा सिर के बाल न खींच, मुझे तो केवल यह विचार हुआ कि ।[3] कहीं

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ

प्रत्येक व्यक्ति की विनती सुनने, लाभ-हानि पहुँचाने तथा आवश्यकता की पूर्ति का सामर्थ्य रखता हो ।

[1]आदरणीय हारून ने यह उस समय कहा जब यह समुदाय सामरी के पीछे लगकर बछड़े की पूजा करने में लग गया ।

[2]इस्राईलियों को यह गौशाला इतना रूचिकर लगा कि आदरणीय हारून अलैहिस्सलाम की बात की भी चिन्ता नहीं की तथा उसका सम्मान तथा पूजा छोड़ने से इंकार कर दिया ।

[3]आदरणीय मूसा समुदाय को मूर्तिपूजा करते देखकर अत्यधिक क्रोधित थे तथा समझते थे कि इसमें उनके भाई हारून के, जिनको अपना प्रतिनिधि बनाकर गये थे ढीलापन का भी हस्तक्षेप है, इसलिए तीव्र क्रोध में हारून की दाढ़ी तथा सिर के बाल पकड़कर उन्हें झिंझोड़ना तथा पूछना प्रारम्भ किया, जिस पर आदरणीय हारून ने उन्हें इतना कठोर व्यवहार करने से रोका ।

فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾

आप यह न कहें कि तूने इस्राईल की सन्तान में मतभेद उत्पन्न कर दिया तथा मेरी बात की प्रतीक्षा न की ।[1]

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَٰسَٰمِرِيُّ ﴿٩٥﴾

(९५) (मूसा ने) पूछा, 'सामरी' तेरा क्या समाचार है ?

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِۦ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ ٱلرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ﴿٩٦﴾

(९६) (उसने) उत्तर दिया कि मुझे वह वस्तु दिखायी दी, जो उन्हें न दिखायी दी, तो मैंने अल्लाह के भेजे हुए के पदचिन्हों से एक मुट्ठी भर ली, उसे उसमें डाल दिया ।[2] इसी प्रकार मेरे हृदय ने मेरे लिए यह बात बना दी ।

---

[1]*सूर: आराफ़* में आदरणीय हारून का यह उत्तर उद्धघृत है कि समुदाय ने मुझे निर्बल समझा तथा मेरी हत्या के पीछे पड़ गये । (आयत-१४२) जिसका अर्थ यह है कि आदरणीय हारून ने अपना कर्तव्य पूर्णरूप से निभाया तथा बछड़े की पूजा रोकने में शिथिलता तथा आलस्य से काम नहीं लिया । परन्तु परस्थितियों को उस सीमा तक नहीं जाने दिया जिससे गृहयुद्ध छिड़ जाये क्योंकि हारून की हत्या का अर्थ फिर उनके अनुयायियों तथा विरोधियों में आपस में अत्यधिक रक्तपात होता तथा इस्राईल की वंश स्पष्ट रूप से दो गुटों में विभाजित हो जाती, जो एक-दूसरे के प्राणों के प्यासे होते । आदरणीय मूसा चूँकि वहाँ स्वयं उपस्थिति नहीं थे, इसलिए इस परिस्थित से अनजान थे, इसी कारण आदरणीय हारून को उन्होंने कटु वचन कहे । परन्तु फिर स्पष्टीकरण पर मूल अपराधी की ओर मुड़े । इसलिए यह भावार्थ ठीक नहीं (जो कुछ लोग करते हैं) कि मुसलमानों की एकता तथा अखन्डता के लिए मूर्तिपूजन तथा असत्य बातों को भी सहन कर लेना चाहिए । क्योंकि आदरणीय हारून ने न ऐसा किया है, न उनके कथन का यह अर्थ है ।

[2]अधिकांश व्याख्याकारों ने الرسول से तात्पर्य जिब्रील लिए हैं तथा अर्थ यह वर्णन किया है कि जिब्रील के घोड़े को गुज़रते हुए सामरी ने देखा तथा उसके पद चिन्हों के नीचे की मिट्टी उसने सम्भाल कर रख ली जिसमें अप्राकृतिक प्रभाव थे । इस मिट्टी को उसने पिघले हुए आभूषणों अथवा बछड़े में डाली तो उसमें से एक प्रकार की ध्वनि निकलनी प्रारम्भ हो गई जो उनको भटकाने का कारण बनी ।

(९७) कहा, ठीक है, जा सांसारिक जीवन में तेरा दण्ड यही है कि तू कहता रहे "मुझे न छूना"[1] तथा एक अन्य भी वचन तेरे साथ है, जो तुझ से कदापि न टलेगा,[2] तथा अब तू अपने इस देवता को भी देख लेना, जिस पर पुरोहित बना हुआ था। हम इसे जला देंगे फिर उसे नदी में कण-कण उड़ा देंगे।[3]

قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهُ وَانْظُرْ إِلَىٰ إِلٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

(९८) नि:संदेह तुम सबका सत्य पूज्य केवल अल्लाह ही है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। उसका ज्ञान सभी चीज़ों पर प्रसारित है।

إِنَّمَا إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

---

[1]अर्थात आजीवन तू यही कहता रहेगा कि मुझसे दूर रहो, मुझे न छुओ, इसलिए कि उसे स्पर्श करते ही स्पर्श करने वाला भी तथा यह सामरी भी ज्वर से ग्रसित हो जाते। इसलिए जब किसी मनुष्य को देखता तो तुरन्त चीख उठता कि لا مساس। कहा जाता है कि फिर यह मनुष्यों की आबादी से निकलकर वन में चला गया, जहाँ पशुओं के साथ उसका जीवन व्यतीत हुआ तथा इस प्रकार वह शिक्षा का नमूना बना रहा अर्थात लोगों को भटकाने के लिए जो व्यक्ति जितना अधिक प्रयत्न, छल तथा कपट अपनायेगा, दुनिया तथा आख़िरत में उसका दण्ड भी उसी हिसाब से तीव्र तथा अत्यन्त भयानक होगा।

[2]अर्थात आख़िरत की यातना इसके अतिरिक्त है जो हर हाल में भुगतना पड़ेगी।

[3]इससे ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजा के चिन्ह समाप्त करना बल्कि उनके अस्तित्व के चिन्ह मिटा डालना, चाहे उनका सम्बन्ध कितने ही पवित्र व्यक्ति से हो, अपमान नहीं, जैसाकि अहले बिदअत, समाधि पूजक, तथा ताज़िया पूजक बताते हैं, बल्कि यह तो एकेश्वरवाद का उद्देश्य तथा धार्मिक सम्मान की बात है। जैसे इस घटना में उस أثر الرسول को नहीं देखा गया जिससे प्रगट हुए आध्यात्मिक प्रकाश का दर्शन भी किया गया, उसके उपरान्त भी उसकी चिन्ता नहीं की गयी इसलिए कि वह मूर्तिपूजन का साधन बन गया था।

(९९) इसी प्रकार हम तेरे[1] समक्ष पूर्व की विगत घटनाओं का वर्णन करते हैं तथा निःसंदेह हम तुझे अपने पास से निर्देश प्रदान कर चुके हैं ।[2]

كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾

(१००) इससे जो मुख फेरेगा,[3] वह निःसंदेह क़ियामत (प्रलय) के दिन अपना भारी बोझ लादे हुए होगा ।[4]

مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾

(१०१) जिसमें सदैव ही रहेगा,[5] तथा उनके लिए क़ियामत के दिन (बड़ा) बुरा भार है ।

خَالِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

(१०२) जिस दिन सुर (नरसिंघा)[6] फूँका जायेगा तथा पापियों को हम उस दिन (भय

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ وَنَحْشُرُ

---

[1]अर्थात जिस प्रकार हमने फ़िरऔन तथा मूसा की कथा का वर्णन किया है, उसी प्रकार पूर्व के नबियों की घटनायें हम आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को वर्णन कर रहे हैं ताकि आप उनसे सूचित रहें, तथा उनमें जो शिक्षा प्राप्त करने के पक्ष हैं, उन्हें लोगों के समक्ष प्रकट करें ताकि लोग उसके प्रकाश में उचित व्यवहार अपना सकें ।

[2] ذكر (स्मृति) से तात्पर्य क़ुरआन करीम है जिससे भक्त अपने प्रभु को याद करता, मार्गदर्शन प्राप्त करता तथा मोक्ष तथा आज्ञापालन का मार्ग अपनाता है ।

[3]अर्थात इस पर ईमान नहीं लायेगा तथा इसमें जो कुछ लिखित है, उसके अनुसार कर्म नहीं करेगा ।

[4]अर्थात महापाप इसलिए कि उसका कर्मपत्र पुण्य से शून्य तथा बुराईयों से भरा हुआ होगा ।

[5]जिससे वे बच न सकेगा, न भाग ही सकेगा ।

[6] صور से तात्पर्य वह قرن (नरसिंघा) है जिसमें इस्राफ़ील अल्लाह के आदेश से फूंक मारेंगे तो क़ियामत आ जायेगी (मुसनद अहमद-२\१९१) एक अन्य हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "इस्राफ़ील नरसिंघा मुख से लगाये खड़े हैं, माथा झुकाया अथवा मोड़ा हुआ है, प्रभु के आदेश की प्रतीक्षा में हैं कि कब उन्हें आदेश दिया जाये तथा वह फूंक मार दें ।" (तिर्मिज़ी अबवाब सिफ़तिल क़ियामः, बाबु मा-जाअ फ़िस्सूर) आदरणीय इस्राफ़ील की पहली फूंक से सब लोग मर जायेंगे, दूसरी फूंक पर अल्लाह के

ٱلْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾

के कारण) नीली-पीली आँखों के साथ घेर लायेंगे ।

يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾

(१०३) वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे होंगे[1] कि हम तो (संसार में) केवल दस दिन ही रहे ।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

(१०४) जो कुछ वे कह रहे हैं, उसकी वास्तविकता की सूचना हमें है, उनमें सब से अति उत्तम मार्ग [2] वाला कह रहा होगा कि तुम केवल एक ही दिन रहे ।

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّى نَسْفًا ﴿١٠٥﴾

(१०५) वे आप से पर्वतों के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं तो (आप) कह दें कि उन्हें मेरा प्रभु कण-कण करके उड़ा देगा ।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾

(१०६) तथा धरती को समतल चटियल मैदान करके छोड़ेगा ।

आदेश से सभी लोग पुन: जीवित होकर हश्र के मैदान में एकत्रित होंगे । आयत में यही दूसरी फूँक तात्पर्य है ।

[1]भय की तीव्रता तथा डर के कारण एक-दूसरे से चुपके-चुपके बातें करेंगे ।

[2]अर्थात सबसे अधिक बुद्धिमान तथा चतुर । अर्थात संसार का जीवन उन्हें कुछ दिन बल्कि क्षण दो क्षण का प्रतीत होगा जिस प्रकार अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ يُقْسِمُ ٱلْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا۟ غَيْرَ سَاعَةٍ﴾

"जिस दिन क़ियामत घटित होगी, काफ़िर सौगन्ध खाकर कहेंगे वह (संसार में) एक क्षण से अधिक नहीं रहे ।" (*सूर: अल-रूम-५५*)

यही विषय अन्य विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है । जैसे *सूर: फ़ातिर-३७, अल-मोमिनून-११२ से ११४ तक, सूर: अल-नाज़िआत* आदि । अर्थ यह है कि आख़िरत के स्थाई तथा अनन्त जीवन की अपेक्षा दुनिया को अनन्त प्रधानता न दिया जाये ।

لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَآ أَمْتًا ﴿١٠٧﴾

(१०७) जिसमें न तो कहीं मोड़ देखेगा, न उँच-नीच।

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُۥ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

(१०८) जिस दिन लोग पुकारने वाले के पीछे चलेंगे,[1] जिसमें कोई त्रुटि न होगी[2] तथा अल्लाह दयालु के समक्ष सभी आवाज़ें धीमी हो जायेंगी, अतिरिक्त खुसर-फुसर के तुझे कुछ भी न सुनाई देगा।[3]

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُۥ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

(१०९) उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आयेगी, परन्तु जिसे रहमान (दयालु) आदेश दे तथा उसकी बात को पसन्द करे।[4]

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِۦ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

(११०) जो कुछ उनके आगे तथा पीछे है, उसे (अल्लाह ही) जानता है, सृष्टि का ज्ञान उसे घेर

---

[1]अर्थात जिस दिन उंचे-नीचे पर्वत, घाटियाँ, गगनचुम्बी भवन, सब समाप्त हो जायेंगे, समुद्र तथा नदी सूख जायेगी तथा सारी धरती समतल मैदान बन जायेगी। फिर एक आवाज़ आयेगी, जिसके पीछे सभी लोग लग जायेंगे अर्थात जिस ओर वह बुलाने वाला बुलायेगा, जायेंगे।

[2]अर्थात इस बुलाने वाले से इधर-उधर नहीं होंगे।

[3]अर्थात पूर्ण शान्ति होगी केवल पदचाप तथा खुसर फुसुर के कुछ नहीं सुनाई देगा।

[4]अर्थात उस दिन किसी की सिफ़ारिश किसी को कोई लाभ नहीं पहुँचायेगी, अतिरिक्त उनके जिनकी सिफ़ारिश के लिए दयालु आज्ञा देगा तथा वह भी प्रत्येक की सिफ़ारिश नहीं करेंगे, बल्कि केवल उनकी सिफ़ारिश करेंगे जिनकी सिफ़ारिश अल्लाह पसन्द करेगा। तथा यह कौन लोग होंगे ? केवल एकेश्वरवाद के अनुयायी, जिनके लिए सिफ़ारिश करने की अल्लाह तआला आज्ञा देगा। यह विषय क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है। जैसे सूरः *नज्म*-२६, सूरः *अंम्बिया*-२८, सूरः *सबा*-२३, सूरः *अन-नबा*-३८ तथा *आयतुल कुर्सी*।

नहीं सकता ।[1]

(१११) तथा सभी मुख उस चिरंजीवी (अनादि-नित्य) तथा चिरस्थाई अल्लाह के समक्ष विनम्रता-पूर्वक झुके होंगे, निःसंदेह वह असफल हो गया जिसने अत्याचार लाद लिया ।[2]

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

(११२) तथा जो पुण्य के कार्य करे एवं ईमानदार भी हो तो न उसे अन्याय का भय होगा, न अधिकार हनन का ।[3]

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

---

[1]इससे पूर्व की आयत में सिफ़ारिश के जो नियम बताये गये हैं, इसमें उसका कारण तथा लक्षण वर्णन कर दिया गया है कि चूँकि अल्लाह के अतिरिक्त किसी को भी किसी बात का पूरा ज्ञान नहीं है कि कौन कितना बड़ा अपराधी है ? तथा वह इस बात का अधिकारी है भी अथवा नहीं कि उसकी सिफ़ारिश की जा सके ? इसलिए इस बात का निर्णय भी अल्लाह तआला ही करेगा कि कौन-कौन लोग नबियों तथा महात्माओं की सिफ़ारिश के अधिकारी हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के अपराध की स्थिति तथा प्रकार को अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता तथा न जान ही सकता है।

[2]इसलिए कि उस दिन अल्लाह तआला पूर्णतः न्याय करेगा तथा प्रत्येक अधिकार वाले को उसका अधिकार दिलायेगा। यहाँ तक कि एक सींग वाली बकरी ने बिना सींग वाली बकरी पर अत्याचार किया होगा, तो उसका भी बदला दिलायेगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे, मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ २३५) इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी हदीस में यह फ़रमाया है «لَتُؤَدُّنَّ الْحُقُوقَ إِلَىٰ أَهْلِهَا». "प्रत्येक अधिकार वाले को उसका अधिकार दे दो वरन क़ियामत के दिन देना पड़ेगा।" एक अन्य हदीस में फ़रमाया : «إِيَّاكُمْ وَالظُّلْمَ؛ فَإِنَّ الظُّلْمَ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ». "अत्याचार से बचो इसलिए कि अत्याचार क़ियामत के दिन अंधकार का कारण होगा।" (सहीह मुस्लिम उपरोक्त किताब, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म) सबसे असफल वह व्यक्ति होगा जिसने मूर्तिपूजा का बोझ भी अपने ऊपर लाद रखा होगा, इसलिए की अनेकेश्वरवाद महा अत्याचार भी है तथा क्षमा के योग्य भी नहीं है।

[3]अन्याय यह है कि उस पर दूसरे के पापों का बोझ भी डाल दिया जाये तथा अधिकार हनन यह है कि पुण्य का बदला कम दिया जाये। यह दोनों बातें वहाँ नहीं होंगी।

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَٰهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ ٱلْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

(११३) तथा इसी प्रकार हमने तुझ पर अरबी (भाषा में) क़ुरआन उतारा है तथा विभिन्न प्रकार से उसमें भय का वर्णन किया है ताकि लोग परहेज़गार बन जायें[1] अथवा उनके दिलों में सोच-विचार उत्पन्न करे ।[2]

فَتَعَٰلَى ٱللَّهُ ٱلْمَلِكُ ٱلْحَقُّ ۗ وَلَا تَعْجَلْ بِٱلْقُرْءَانِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰٓ إِلَيْكَ وَحْيُهُۥ ۖ وَقُل رَّبِّ زِدْنِى عِلْمًا ﴿١١٤﴾

(११४) इस प्रकार अल्लाह (तआला) सर्वश्रेष्ठ सत्य एवं वास्तविक स्वामी है ।[3] तू क़ुरआन पढ़ने में शीघ्रता न कर इससे पूर्व कि तेरी ओर जो प्रकाशना (वह्यी) की जाती है वह पूर्ण की जाये ।[4] तथा यह कह कि प्रभु ! मेरा ज्ञान बढ़ा ।[5]

---

[1]अर्थात पाप, निषेधित तथा कुकर्म करने से रूक जायें ।

[2]अर्थात आज्ञा पालन तथा सामिप्य प्राप्त करने की रूचि अथवा विगत समुदायों की दुर्दशा तथा घटनाओं से शिक्षा प्राप्त करने की भावना उनमें उत्पन्न कर दे ।

[3]जिसका वचन तथा चेतावनी सत्य है, स्वर्ग-नरक सत्य है, तथा उसकी प्रत्येक बात सत्य है ।

[4]जिब्रील जब प्रकाशना लेकर आते तथा सुनाते तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी जल्दी-जल्दी साथ ही साथ पढ़ते जाते कि कहीं कुछ भाग भूल न जायें, अल्लाह तआला ने उससे मना किया तथा कहा कि ध्यान से पहले प्रकाशना को सुनें, उसके बाद याद कराना तथा दिल में बिठाना हमारा कार्य है, जैसाकि *सूर: क़ियाम:* में आयेगा ।

[5]अर्थात अल्लाह तआला से ज्ञान की अधिकता के लिए प्रार्थना करते रहिये, इसमें धर्मगुरूओं के लिए भी शिक्षा है कि धार्मिक निर्णय में पूरे शोध तथा विचार से कार्य करें, शीघ्रता से बचें तथा ज्ञान के अधिकता के साधनों को अपनाने में कमी न करें । इसके अतिरिक्त ज्ञान से तात्पर्य क़ुरआन तथा हदीस का ज्ञान है । क़ुरआन में इसी को ज्ञान कहा गया है तथा उनके जानकार को विद्वान (आलिम) । अन्य चीज़ों का ज्ञान, जो मनुष्य जीवन यापन के लिए प्राप्त करता है, वह सभी कला हैं, शिल्प हैं तथा उद्योग हैं । नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस ज्ञान के लिए प्रार्थना करते थे, वह प्रकाशना

(११५) तथा हमने आदम को प्रथम ही बलपूर्वक आदेश दे दिया था, परन्तु वह भूल गया तथा हमने उसमें कोई निश्चय नहीं पाया।[1]

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلَىٰٓ ءَادَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُۥ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

(११६) तथा जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को दण्डवत (सजदा) करो, तो इब्लीस

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟

तथा रिसालत का ही ज्ञान है जो क़ुरआन तथा हदीस में सुरक्षित है जिसके द्वारा मनुष्य का सम्बन्ध अल्लाह तआला से स्थापित होता है, उसके व्यवहार तथा चरित्र में सुधार आता है तथा अल्लाह की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता का पता चलता है। ऐसी दुआवों में एक दुआ यह भी है जो आप पढ़ा करते थे।

«اللَّهُمَّ انْفَعْنِي بِمَا عَلَّمْتَنِي، وَعَلِّمْنِي مَا يَنْفَعُنِي، وَزِدْنِي عِلْماً، وَالْحَمْدُ لِلّهِ عَلَىٰ كُلِّ حَالٍ».

(इब्ने माजा बाबुल इनतेफ़ाअ बिल इल्म वल अमल)

[1] نسيان (भूल जाना) प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति में सम्मिलित है तथा विचार में क्षीणता अर्थात साहस की कमी यह भी मनुष्य की प्रकृति में सामान्य रूप से पाया जाता है। यह दोनों क्षीणता ही शैतान की उत्पन्न की हुई शंकाओं में फँस जाने का कारण होती हैं, यदि इन कमज़ोरियों में अल्लाह के आदेशों से विद्रोह का विचार तथा अल्लाह की अवहेलना की भावना सम्मिलित न हो, तो भूल तथा विचारों की दृढ़ता में कमजोरी से उत्पन्न होने वाली त्रुटियाँ नबूअत की पदवी तथा गरिमा के विरूद्ध नहीं क्योंकि इसके उपरान्त मनुष्य तुरन्त लज्जित होकर अल्लाह के सदन में झुक जाता है तथा क्षमा-याचना में लीन हो जाता है, (जैसाकि आदरणीय आदम ने भी किया)। आदरणीय आदम को अल्लाह तआला ने समझाया था कि शैतान तेरा तथा तेरी पत्नी का शत्रु है, यह तुम्हें स्वर्ग से न निकलवा दे। यही बात है जिसे प्रतिज्ञा के शब्द से वर्णन किया गया है। आदम इस प्रतिज्ञा को भूल गये तथा अल्लाह तआला ने एक वृक्ष के निकट जाने अर्थात उससे कुछ खाने से मना किया था। आदरणीय आदम के दिल में यह बात थी कि वह उस वृक्ष के निकट नहीं जायेंगे। परन्तु जब शैतान ने अल्लाह की सौगन्ध खाकर यह बात कही कि इस वृक्ष के फल में यह गुण है कि जो इसे खा लेता है, उसे स्थाई जीवन तथा राज्य प्राप्त हो जाता है तो ध्येय पर अटल न रह सके तथा इस ध्येय में दृढ़ता न होने के कारण शैतानी चाल के शिकार हो गये।

के अतिरिक्त सबने किया, उसने साफ इंकार कर दिया।

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿۱۱۶﴾

(११७) तो हमने कहा हे आदम ! यह तेरा तथा तेरी पत्नी का शत्रु है, (ध्यान रहे) ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को स्वर्ग से निकालवा दे कि तू संकट में पड़ जाये।[1]

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿۱۱۷﴾

(११८) यहाँ तो तुझे यह सुविधा है कि न तू भूखा होता है, न नग्न।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿۱۱۸﴾

(११९) तथा न तू यहाँ प्यासा होता है न धूप से कष्ट उठाता है।

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿۱۱۹﴾

(१२०) परन्तु शैतान ने उसे शंका में डाला, कहने लगा कि हे आदम ! क्या मैं तुझे स्थाई जीवन का वृक्ष तथा वह स्वामित्व बतलाऊँ जो कभी पुराना न हो।

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿۱۲۰﴾

---

[1]यहाँ شقا मेहनत तथा परिश्रम के अर्थ में है, अर्थात स्वर्ग में जो खाने-पीने, वस्त्र तथा रहने की सुविधा बिना किसी परिश्रम के प्राप्त हैं स्वर्ग से निकल जाने के उपरान्त इन चारों वस्तुओं की प्राप्ति के लिए मेहनत तथा परिश्रम करना पड़ेगा, जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य को इन मूल आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त मात्र आदम से कहा गया कि तू मेहनत तथा परिश्रम में पड़ जायेगा। दोनों को नहीं कहा गया, यद्यपि वृक्ष का फल आदम तथा हव्वा दोनों ने ही खाये थे। इसलिए कि मुख्य सम्बोधन आदम को ही था। इसके अतिरिक्त मूल आवश्यकताओं की पूर्ति का भार पुरूष ही पर होता है, स्त्री पर नहीं। अल्लाह तआला ने स्त्री को इस मेहनत तथा परिश्रम से सुरक्षित रख कर घर की रानी का पद प्रदान किया है। परन्तु आज स्त्री को "अल्लाह की दया" "दासता की जंजीर" प्रतीत होती है जिससे स्वतन्त्र होने के लिए वह व्याकुल तथा आन्दोलन में व्यस्त है। अफ़सोस ! शैतानी चाल भी कितनी प्रभावशाली तथा उसका जाल भी कितना लुभावना तथा मनभावी है।

(१२१) अत: उन दोनों ने उस वृक्ष से कुछ खा लिया फिर उनके गुप्तांँग खुल गये तथा स्वर्ग के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे। आदम ने अपने प्रभु की अवज्ञा की तथा बहक गया।[1]

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ الْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ﴿١٢١﴾

(१२२) फिर उसके प्रभु ने उसे सुसज्जित किया, उसकी क्षमा को स्वीकार किया तथा उसका मार्गदर्शन किया।[2]

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ﴿١٢٢﴾

(१२३) कहा, तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम आपस में एक-दूसरे के शत्रु हो, अब तुम्हारे पास जब कभी भी मेरी ओर से निर्देश पहुँचे, तो जो मेरे निर्देश का पालन करेगा, न वह बहकेगा, न कठिनाई में पड़ेगा।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ﴿١٢٣﴾

---

[1]अर्थात वृक्ष का फल खाकर अवज्ञा की, जिसका कुफल यह हुआ कि वह उद्देश्य अथवा सत्यमार्ग से बहक गया।

[2]इससे कुछ लोग भावार्थ निकालते हुए कहते हैं कि आदरणीय आदम से उक्त भूल नबूअत से पूर्व हुई, तथा नबूअत से आपको उसके पश्चात सुशोभित किया गया। परन्तु हमने पिछले पृष्ठ पर इस 'भूल' की जो वास्तविकता वर्णन की है, वह निर्दोषता के प्रतिकूल नहीं रहती। क्योंकि ऐसी भूल तथा त्रुटि जिसका सम्बन्ध आमन्त्रण तथा अल्लाह का संदेश पहुँचाने तथा धर्म विधान से नहीं, अपितु व्यक्तिगत कर्म से हो तथा उसमें भी उसका कारण निश्चय की शिथिलता हो, तो यह वास्तव में वह पाप ही नहीं है जिसके कारण मनुष्य अल्लाह के क्रोध का पात्र बने। इस पर जो पाप शब्द बोला गया है वह मात्र उसकी गरिमा तथा उच्च पद के कारण कि बड़ों की छोटी-सी त्रुटि भी बड़ी समझ ली जाती है, इसलिए आयत का यह अर्थ नहीं कि हमने उसके पश्चात उसे नबूअत के लिए चुन लिया, बल्कि अर्थ यह है कि लज्जा तथा क्षमा-याचना के पश्चात हमने फिर उसे उच्च पद पर आसीन कर दिया, जो पहले उन्हें प्राप्त था। उनको धरती पर उतारने का निर्णय, हमारी इच्छा, ज्ञान तथा राहस्य पर आधारित था। इससे यह न समझ लिया जाये कि यह हमारा क्रोध है, जो आदम पर अवतरित हुआ।

(१२४) तथा जो मेरी याद से मुख फेरेगा, उसका जीवन तंग रहेगा[1] तथा हम क़ियामत के दिन उसे अंधा करके उठायेंगे ।[2]

وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ﴿١٢٤﴾

(१२५) (वह) कहेगा प्रभु ! मुझे तूने अंधा बनाकर क्यों उठाया ? यद्यपि मैं देखता भालता था ।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ﴿١٢٥﴾

(१२६) उत्तर मिलेगा कि इसी प्रकार होना चाहिए था, तूने मेरी आयी हुई आयतों को भुला दिया । इसी प्रकार आज तू भी भुला दिया जाता है ।

قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنسَىٰ ﴿١٢٦﴾

(१२७) तथा हम ऐसा ही बदला प्रत्येक व्यक्ति को दिया करते हैं, जो सीमा उल्लंघन करे तथा अपने प्रभु की आयतों पर ईमान न लाये, तथा निःसंदेह परलोक (आख़िरत) की यातना अत्यधिक कड़ी तथा स्थाई है ।

وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِن بِآيَاتِ رَبِّهِ ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَىٰ ﴿١٢٧﴾

(१२८) क्या उनका मार्गदर्शन इस बात ने भी न किया कि हमने उनसे पूर्व बहुत-सी बस्तियाँ ध्वस्त कर दी हैं, जिनके वासियों के स्थान पर ये चल फिर रहे हैं । निःसंदेह इसमें बुद्धिमानों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं ।

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ﴿١٢٨﴾

---

[1]इस तंगी से कुछ विद्वानों ने क़ब्र की यातना तथा कुछ ने वह चिन्ता, बेचैनी तथा व्याकुलता तात्पर्य ली है जिस में अल्लाह की याद से निश्चिन्त बड़े-बड़े धनवान फंसे रहते हैं ।

[2]इससे तात्पर्य वास्तव में आँख से अंधा होना है, अथवा सूझबूझ से अन्धा होना है अर्थात उसे वहाँ कोई ऐसा तर्क नहीं सूझेगा जिसे प्रस्तुत करके वह अग्नि दण्ड से मुक्त हो जाये ।

(१२९) तथा यदि तेरे प्रभु की बात पूर्वत: निर्धारित तथा समय निर्धारण न होता, तो इसी समय यातना आ चिमटती ।[1]

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

(१३०) तो उनकी बातों पर धैर्य रख तथा अपने प्रभु की पवित्रता एवं महिमा का वर्णन करता रह, सूर्योदय से पूर्व तथा उसके अस्त होने से पूर्व तथा रात्रि के विभिन्न समय में भी तथा दिन के भागों में भी महिमागान करता रह ।[2] अति सम्भव है कि तू प्रसन्न

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ﴿١٣٠﴾

---

[1]अर्थात ये झूठे तथा मक्का के मूर्तिपूजक देखते नहीं कि उनसे पूर्व कई समुदाय गुज़र चुके हैं, जिनके ये उत्तराधिकारी हैं तथा उनके निवासों की ओर से इनका यातायात है, उन्हें हम इसी झुठलाने के कारण नष्ट कर चुके हैं, जिनके भयानक परिणाम में बुद्धिमानों तथा विद्वानों के लिए निशानियाँ हैं। परन्तु ये मक्कावासी अपनी आँखें बन्द किये हुए उन्हीं का अनुकरण कर रहे हैं। यदि अल्लाह तआला ने पूर्व से ही यह निर्णय न किया होता कि वह बिना किसी तर्क पूर्ण किये तथा उस अवधि के पूर्ण होने से पूर्व, जो वह अवसर के लिए किसी समुदाय को प्रदान करता है, किसी को नाश नहीं करता तो तुरन्त अल्लाह का प्रकोप उन्हें आकर चिमटता तथा ये विनाश का स्वाद चख चुके होते । अर्थ यह है कि रिसालत को झुठलाने के उपरान्त यदि उन पर अब तक प्रकोप नहीं आया, तो यह न समझें कि भविष्य में भी नहीं आयेगा, बल्कि अभी उनको अल्लाह की ओर से अवसर प्राप्त है, जैसाकि वह प्रत्येक समुदाय को देता है। कर्म के अवसर की अवधि समाप्त होते ही उनको अल्लाह के प्रकोप से बचाने वाला कोई नहीं होगा।

[2]कुछ व्याख्याकारों के निकट महिमागान से तात्पर्य नमाज़ है तथा वह इससे पाँच नमाज़ें समझते हैं । सूर्योदय से पूर्व फ़ज्र, सूर्यास्त से पूर्व अस्र, रात्रि के क्षण मग़रिब तथा ईशा तथा दिन के किनारों से ज़ोहर की नमाज़ का तात्पर्य है क्योंकि ज़ोहर का समय यह दिन के प्रथम पक्ष का अन्तिम तथा दिन के अन्तिम पक्ष का प्रथम भाग है। तथा कुछ के निकट इन समयों में वैसे ही अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा की जाती है जिसमें नमाज़, क़ुरआन का पाठ, वर्णन तथा प्रार्थना तथा ऐच्छिक इबादत सब सम्मिलित हैं। अर्थ यह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इन मूर्तिपूजकों के झुठलाने से हताश न हों। अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा करते रहें। अल्लाह तआला जब चाहेगा, उनको दबोच लेगा।

हो जाये ।[1]

(१३१) तथा अपनी दृष्टि कदापि उन वस्तुओं की ओर न दौड़ाना, जो हमने उनमें से विभिन्न लोगों को साँसारिक शोभा के लिये दे रखी हैं ताकि इसमें उनकी परीक्षा कर लें ।[2] तेरे प्रभु का प्रदान किया हुआ ही (अति श्रेष्ठ तथा स्थाई है ।[3]

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾

(१३२) तथा अपने परिवार के लोगों पर नमाज़ के लिए बल दे तथा स्वयं भी उस पर

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصْطَبِرْ

---

[1]यह فسبح से सम्बन्धित है । अर्थात इन समय में महिमा का वर्णन करें, यह आशा रखते हुए कि अल्लाह के यहाँ आपको वह स्थान तथा पद प्राप्त हो जायेगा जिससे आप प्रसन्न हो जायेंगे ।

[2]यह वही विषय है जो इससे पूर्व *सूरः आले-इमरान*-१९६ तथा १९७, *सूरः अल-हिज्र*-८७ तथा ८८ तथा *अल-कहफ़*-७ आदि में वर्णित हुआ है ।

[3]इससे तात्पर्य आख़िरत का बदला तथा पुण्य है, जो दुनिया के सुख-सुविधा से श्रेष्ठ है तथा इसके सापेक्ष स्थाई भी । हदीस में आता है कि आदरणीय उमर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए देखा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बिना बिस्तर की चटाई पर लेटे हुए हैं, तथा घर की सामग्री की यह स्थिति है कि घर में चमड़े की दो वस्तुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं । आदरणीय उमर की आँखों से अश्रु प्रवाहित हो गये । नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, उमर ! क्या बात है, रोते क्यों हो ? उत्तर दिया, हे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! कैसर (रोम का राजा) तथा किसरा (ईरान का राजा) किस प्रकार सुख-सुविधा से पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का, इस बात के उपरान्त कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं, यह स्थिति है ? फ़रमाया, उमर ! "क्या तुम अब तक संदेह में हो ? यह वे लोग हैं जिनको सुख-सुविधा की वस्तुयें संसार में ही दे दी गयी हैं ।" अर्थात आख़िरत में उनके लिए कुछ नहीं होगा । (सहीह बुख़ारी सूरतुत-तहरीम तथा सहीह मुस्लिम बाबुल ईला)

عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿١٣٢﴾

दृढ़ रह,[1] हम तुझसे जीविका नहीं माँगते, अपितु हम स्वयं तुझे जीविका प्रदान करते हैं। अन्त में सर्व सम्मान सदाचारियों का ही होता है।

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٣٣﴾

(१३३) तथा (उन्होंने) कहा कि यह (नबी) हमारे लिए अपने प्रभु की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं लाया ?[2] क्या उनके पास पूर्व की किताबों की स्पष्ट निशानियाँ नहीं पहुँचीं ?[3]

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿١٣٤﴾

(१३४) तथा यदि हम इससे पूर्व ही[4] उन्हें प्रकोप से ध्वस्त कर देते, तो अवश्य यह कह उठते कि हे हमारे प्रभु ! तूने हमारे पास अपना रसूल (ईशदूत) क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते, इससे पूर्व कि

---

[1]इस सम्बोधन में पूरा मुस्लिम समुदाय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी है। अर्थात प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह स्वयं भी नमाज़ नियमित रूप से पढ़े तथा अपने परिवार वालों को भी नमाज़ पढ़ने पर बल दे।

[2]अर्थात उनकी इच्छानुसार निशानी, जैसे समूद के लिए ऊँटनी प्रकट की गयी थी।

[3]इनसे तात्पर्य तौरात, इंजील तथा ज़बूर आदि है। अर्थात क्या उनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों को प्रदर्शित नहीं किया गया है, जिनसे उनकी नबूअत की पुष्टि होती है। अथवा यह अर्थ है कि क्या उनके पास पिछले समुदायों के यह हालात नहीं पहुँचे कि उन्होंने जब अपनी इच्छानुसार चमत्कार की माँग की तथा वह उनको दिखा दिया गया, परन्तु उसके उपरान्त वे ईमान नहीं लाये तो उन्हें नाश कर दिया गया।

[4]तात्पर्य दुनिया के अन्तिम पैग़म्बर आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

हम अपमानित होते तथा धिक्कारे जाते।

(१३५) कह दीजिए कि प्रत्येक परिणाम की प्रतीक्षा में है,[1] तो तुम भी प्रतीक्षा में रहो। अभी-अभी पूर्णत: जान लोगे कि सीधे मार्ग वाले कौन हैं तथा कौन मार्ग प्राप्त किये हुए हैं ?[2]

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ﴿١٣٥﴾

[1]अर्थात मुसलमान तथा काफ़िर दोनों इसकी प्रतीक्षा में हैं कि कुफ्र विजयी होता है अथवा इस्लाम विजयी होता है ?

[2]इस का ज्ञान तुम्हें इस से हो जायेगा कि अल्लाह की सहायता से सफल तथा सम्मानित कौन होता है ? अन्तत: यह सफलता मुसलमानों के पक्ष में आयी, जिस से यह स्पष्ट हो गया कि इस्लाम ही सीधा मार्ग है तथा उसके अनुयायी ही मार्गदर्शन प्राप्त हैं।